वीथिकाई पत्रिका

अंक 14

जुलाई, 2024

DOI: 10528/ZENODO.11063568

WWW.VITHIKA.ORG

साहित्य, कला, संस्कृति, विज्ञान को समर्पित

पंचतत्व परमेश्वर

अर्चना उपाध्याय

प्रधान संपादक

वीथिका ई पत्रिका

संपादक मंडल

अर्चना उपाध्याय	चित्रा मोहन	सुमित उपाध्याय
प्रधान संपादक	मुख्य सलाहकार संपादक	प्रबंध संपादक

वीथिका परिवार

संरक्षक समिति
प्रो. विनय मिश्र
प्रो. प्रभाकर सिंह
डॉ. बिपिन कुमार मिश्र

वरिष्ठ सलाहकार संपादक
डॉ. आशुतोष तिवारी

वरिष्ठ सह संपादक
डॉ. सुधांशु लाल

वेब डिज़ाइन
रोशन भारती

प्रकाशक
उज्जवल उपाध्याय
यशिका फाउंडेशन, मऊ

कवर फोटो : श्री चंद्रेश वर्मा जी

संपादकीय समिति

डॉ मोहम्मद ज़ियाउल्लाह
डॉ अरुण कुमार सिंह
डॉ धनञ्जय शर्मा
श्री मनोज कुमार सिंह
एड. सत्यप्रकाश सिंह
श्री बृजेश गिरि
श्री नन्दलाल शर्मा

कवर पेज संपादक
अर्चिता उपाध्याय

कार्टून संपादक
कृतिका सिंह

सलाहकार परिषद
डॉ अखिलेश पाण्डेय
डॉ शिवमूरत यादव

UDYAM-UP 55 0010534

vithikaportal@gmail.com

www.vithika.org

वीथिका ई -पत्रिका

पत्रिका में छपे सभी लेख लेखक के अपने विचार हैं

वीथिका ई पत्रिका

अंक: 14

जुलाई, 2024

विषय सूची :

गलियों की बात 04

नामवर सिंह की सर्जनात्मक आलोचना दृष्टि : विमलेश कुमार मिश्र 05

अनुभव का अन्तःस्वर: असाध्यवीणा : अजित कुमार राय 09

आग उगलता आसमान : मनोज सिंह 13

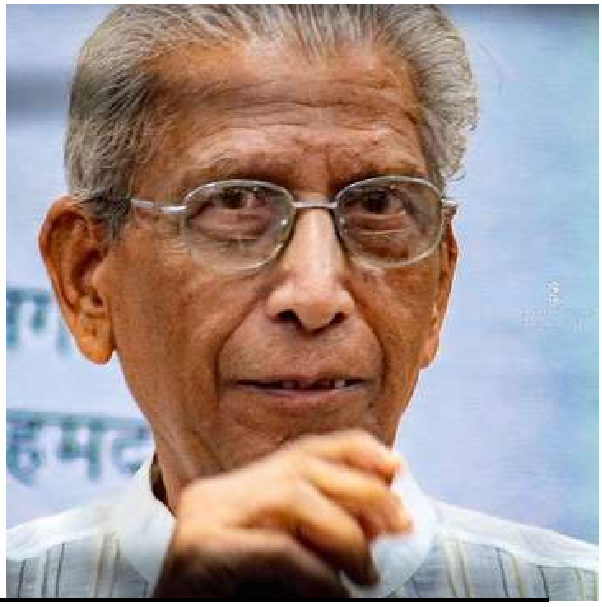

जगन्नाथ पुरी रथ यात्रा : गोवर्धनदास बिन्नाणी 16

पंचतत्व परमेश्वर : नुक्कड़ नाटक विनोद मिश्र 'सुरमणि' 18

करेरी झील : डॉ जय महलवाल 22

पर्व विशेष : कविता : अंकुर सिंह 25

सोंधी मिट्टी : कवितायेँ अश्विनी अकल्पित, डॉ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, डॉ राजेश तिवारी 'मक्खन', मृत्युंजय कुमार मनोज, नीरज कुमार मुकेश कुमार मोदी 27

कृतिका के कार्टून : कृतिका सिंह 30

Visit

WWW.VITHIKA.ORG

to download this current issue to your tablet

गलियों की बात

जुलाई , 2024

अर्चना उपाध्याय
प्रधान संपादक

मानसून हमारे आँगन आ पहुंचा है, बारिश की बूंदों से वन-उपवन, नदी-झरनों, जंगल-पर्वत, पशु-पक्षी-मानव सबने नया जीवन पाया है. वीथिका ई पत्रिका ने जून अंक में पर्यावरण विमर्श को गंभीरता से उठाया. आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि देशभर में पर्यावरण पर बेहद गंभीर चर्चा हो रही है. हम मानव जिन पांच तत्वों से मिलकर बने हैं वो क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर इसी प्रकृति से हमें मिले हैं, तभी तो प्रकृति माँ है. आज साहित्य, विज्ञान, कला सभी क्षेत्रों में प्रकृति के दोहन पर चिंता व्यक्त हो रही है, ऐसे में इस अंक में बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध लोककलाकार श्री विनोद मिश्र 'सुरमणि' जी द्वारा रचित नुक्कड़ नाटक के द्वारा इस चर्चा को आगे बढाया जा रहा है.

इसके साथ ही आप सभी को बारिश की हल्की बौछारों के साथ सावन मास की शुभकामनाएं.

नामवर सिंह की सर्जनात्मक आलोचना दृष्टि

विमलेश कुमार मिश्र
आचार्य, हिन्दी विभाग,
दीद. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

डॉ० नामवर सिंह हिन्दी के समकालीन आलोचकों में अग्रगण्य है। केवल अग्रगण्य ही नहीं अनेक कारणों से हिन्दी जगत के जीवित मिथक भी बन गये हैं। उनसे सम्बन्धित अच्छी-बुरी-सच्ची या कल्पित किंवदन्तियों प्रचलित है। उनका कवि-रूप उतना विदित नहीं है। जिन लोगों ने उनकी कविताएं पढ़ी या सुनी है। वे कहते हैं कि उनका कवि रूप उनके आलोचक रूप से कम महत्वपूर्ण नहीं है। सी.पी. आई. के निर्देश पर उनका 1950 में लोकसभा के लिए चुनाव लड़ना इस कारण दो वर्षों के बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उनकी नियुक्ति का रद्द होना फिर कुछ वर्षों बाद उनका सागर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में पहुंचना और यहाँ भी टिक नहीं पाना, कुछ दिनों बाद पार्टी के निर्देश पर ही उसके मुख्य पत्र साप्ताहिक 'जनयुग' के सम्पादन के लिए उनका दिल्ली जाना और उस पत्र को नया स्वरूप देना, राजकमल से जुड़ना फिर "आलोचना" का श्रमपूर्वक सम्पादन करना, जोधपुर में नियुक्ति के बाद यहाँ से के०एम० मुशी संस्थान में आना और अन्त में जे०एन०यू० में विभाग का पुनर्गठन और पाठ्यक्रम का निर्माण। यह सम्पूर्ण हिन्दी संसार के लिए संतोष की बात है कि इस भाग-दौड़ में भी उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा और देशी-विदेशी साहित्य का ऐसा गहन और व्यापक अध्ययन किया,

जैसा हिन्दी में तो नहीं ही दिखलाई पड़ता, किसी हिन्दीतर भाषा में भी नहीं देखने को मिलता।

नामवर सिंह के सन्दर्भ में डॉ० रामदरश मिश्र ने कहा है- "नामवर सिंह जी अच्छे कवि तो थे ही, चिन्तक भी थे। वे शंभुनाथ सिंह के शिष्य कवियों में थे। उनके साथ कवि-गोष्ठियों और कवि सम्मेलनों में जाते थे अपने मधुर कंठ से कविताएं पढ़ते थे। वे कविताएं नामवर भाई के गहरे प्रकृति प्रेम की गवाही देती थीं। मुझे विश्वास है कि नामवर भाई यदि कविताएं करते रहे होते तो समकालीन बड़े कवियों में उनकी गणना होती किन्तु न जाने उन्हें क्या सूझी कि धीरे-धीरे कविता से आलोचना की ओर अग्रसर होते गये। वैसे शुरू से ही उनमें समीक्षात्मक प्रतिभा लक्षित हो रही थी।"

इसी तरह प्रो० निर्मला जैन नामवर सिंह के सम्बन्ध में कहती हैं – "नामवर सिंह अपने ढंग के अकेले और विलक्षण आलोचक हैं जिनके कथित का वजन उनके लिखित की तुलना में कहीं अधिक है। यही उनकी अक्षय ख्याति का आधार भी है। हिन्दी की शैक्षिक दुनिया में उनका प्रवेश "हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग" शीर्षक पुस्तक से हुआ। अपने विद्यार्थी जीवन में हमने इस विषय पर उसे एक मात्र प्रामाणिक पुस्तक के रूप में जाना और परीक्षा की तैयारी में उसका उपयोग किया। यह बात सन् 1954-50 के बीच की है। आलोचना के क्षेत्र में वह शुक्लोत्तर बृहत्रयी (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे बाजपेयी और डॉ० नगेन्द्र) के दबदबे का दौर था। डॉ० रामविलास शर्मा की ख्याति प्रगतिशील आलोचक के रूप में हो चली थी और डॉ० देवराज भी किसी हद तक अपनी जगह बना चुके थे। बाकी अधिकांश लोग इत्यादि की गिनती में उल्लेखनीय समझे जाते थे "

सन् 1964 में श्रीकान्त वर्मा ने हिन्दी कहानी पर गान्धी सन्निधि में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया था। नामवर जी को उसका समापन भाषण देना था। आयोजन में जाने की उत्कंठा देखकर जैन साहब ने प्रत्ताय रखा कि वे मुझे अन्तिम सत्र के लिए वहीं उतारकर अपने किसी काम के लिए आगे बढ़ जाएंगे और वापसी में मुझे ले लेंगे। वे लौटे तो नामवर जी का भाषण जारी था। जैन साहब चुपचाप पीछे की पक्ति में बैठ गये। मित भाषी जैन साहब ठीक-ठाक हिन्दी पढ़-लिख भी नहीं सकते थे।

कुछ देर की चुप्पी के बाद सहसा बोले मेरी समझ में आ गया। तुम इस मीटिंग में आने के लिए क्यों इतने 'कीन' थी मैं जब हाल में घुसा तो सामने देखकर लगा कि ये मुसी-तुसी मैली सी पोशाक वाले गंवार से श्रीमान् जी क्या बोल रहे होंगे, पर मैं तो दंग रह गया। कमाल का बोलते हैं भाई ये, क्या नाम है इनका? वे अटके तो मैंने जोड़ा नामवर सिंह। खास बात इस प्रसंग में यह भी कि नामवर जी के भाषण का अधिकांश जैन साहब की समझ में आ गया था।

नामवर सिंह जी के बेकारी-काल के दौरान लिखी गयी रचनाओं में 'छायावाद', 'आधुनिक हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियों' और लेख संकलन, इतिहास और आलोचना प्रमुख हैं । उन्होंने अपने गुरुवर द्विवेदी जी के प्रति श्रद्धा में "दूसरी परम्परा की खोज" नामक पुस्तक भी लिखी है। 'नयी कविता के प्रतिमान' के रचना प्रसंग में अकादमी पुरस्कार का प्रसंग तो रहा ही, पर उसके अलावा मित्रों का दबाव और जाने-अनजाने डॉ० नगेन्द्र के साथ कई प्रसंगों को लेकर इस बीच जो मतभेद पैदा हो गये थे उनका हिसाब चुकता कर लेने की दमित इच्छा भी काम कर ही रही होगी।

डॉ० नामवर सिंह की प्रसिद्धि ऐसे आलोचक के रूप में है जिसने अपनी बड़ी पैनी दृष्टि से हिन्दी के रचना-संसार की समझ को या कहें समझाने की दृष्टि को बदला है। ऐसा करते हुए उन्होंने आलोचना-कर्म का एक नया व्याकरण लिखा है, उसके औजार और सरोकार बदले हैं। उन्होंने आधी सदी से अधिक समय से हिन्दी जगत् के साथ अपनी दृष्टि को साझा किया है- कलेशों और खतरों के बावजूद। नामवर सिंह जी ने सहृदय के रूप में विभिन्न ज्ञान परम्पराओं की पचाया है और उस परिपाक में अपने चिन्तन को व्यवस्थित रूप से परिष्कृत किया है। यह शास्त्र का अवगाहन और अपने सामाजिक संदर्भ एवं इतिहास के साथ चलने का आग्रह ही है कि ये अभी भी अपने विचारी, स्थापनाओं को मांजते रहते हैं. अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार कर उन्हें सुधारने, उनसे आगे जाने नए दृष्टिकोण से देखने की आदत बनी हुई है।

नामवर जी की आलोचना सर्जनात्मक दृष्टि से पूर्ण है। जिसमें कल्पना, यथार्थ और वैचारिक-मावात्मक रुझान के अंशों को अगल करना मुश्किल है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी में उन्होंने आलोचकीय चेतना और सांस्कृतिक संवेदना की जो नयी भारा की खोज की वह हिन्दी गद्य का सर्जनात्मक प्रतिमा का चमत्कार सरीखा है। नामवर जी ने सामाजिक सरोकारों पर भी ध्यान दिया है। सेकुलरिज्म, साम्प्रदायिकता, फासीवाद, भारतीय परम्परा आदि को लेकर उनके अपने विचार है। नामवर जी ने आलोचना के मिथक को तोड़ा है। खासतौर पर आज के जमाने में जब इतने तरह के बाद, विमर्श और केन्द्र बन रहे हैं। नामवर जी अपने ढंग से पूरब और पश्चिम दोनों तरह के विचारों का उपयोग कर कुछ नया कहने का लगातार यत्न करते रहे हैं। उनसे असहमत तो हुआ जा सकता है पर उन्हें छोड़ा नहीं जा सकता है। उनहें इग्नोर करना असम्भव है। उनके बिना हिन्दी आलोचना की कथा अधूरी रहेगी। उनमें पाठित्य और देहाती दृष्टि दोनों का एक दुर्लभ संयोग मिलता है।

नामवरजी मार्क्सवादी होते हुए भी जनतंत्र या लोकतंत्रवादी रहे हैं, आलोचना में लोकधर्मी। जब उन्हें कहीं उलझन मालूम पड़ी है. वे लोक की कसौटी पर उसे सुलझाते रहे हैं। नामवर जी की आलोषना में शुरू से ही एक खुलापन रहा है, जो रूढ़ मार्क्सवादियों को रास नहीं आता। मार्क्सवाद के शिकंजे को ढीला करने का प्रयास उनमें शुरू से ही दिखलाई पड़ता है। पहले वे प्रयोगवाद और अज्ञेय के ऐसे आलोचक थे, जो अपने को बदलने के लिए कत्तई तैयार नहीं थे, पर धीरे-धीरे उन्होंने अपने को बदला। जैसे कोई सच्चा रचनाकार अपना विकास करता है. वैसे ही सच्चा आलोचक भी।

रुढ़ मार्क्सवाद में विचारधारा का बहुत जोर है। आलोचना में इसकी अभिव्यक्ति किस रूम में होती है. इसका सबसे अच्छा उदाहरण मुक्तिबोध की पुस्तक कामायनी एक पुनर्विचार है। ऐसी स्थिति में नामवर जी ने यह कहा कि "विचारधारा हमें अमानवीकृत करती है। इस बात पर हिन्दी के प्रगतिशीलों और जनवादियों ने इस पर इसी प्रकार नामवर जी ने एक गोष्ठी में यह भी कहा कि शुक्र है इस देश में कम्युनिस्टों का शासन नहीं है, वर्ना हम सभी यानी उनसे असहमति रखने वाले लोग, जेलों में बन्द होते।

नामवर जी अपनी ही स्थापनाओं का खण्डन अपने भाषणों में कर दिया करते थे। वे इसे अनुचित भी नहीं मानते। कोई विचारक किसी एक ही बिन्दु पर क्यों अड़ा रहे? क्या उसे अपने विचारों में परिवर्तन का अधिकार नहीं है? अपनी छायावाद' पुस्तक में नामवर जी ने छायावाद की प्रशंसा की। लेकिन कविता के नये प्रतिमान की शुरूआत ही होती है. छायावादी संस्कारों के खण्डन से फिर उन्होंने 'कविता के नये प्रतिमान की स्थापनाओं का भी खण्डन कर दिया। दूसरी परम्परा की खोज में उन्होंने आचार्य शुक्ल को पहली और आचार्य द्विवेदी को दूसरी परम्परा का आलोधक कहा था तथा सीधे तो नहीं पर एक आयोजन में उन्होंने कहाकि वे हजारी प्रसाद द्विवेदी को आलोचक नहीं विचारक मानते हैं। बरती के एक आयोजन में उन्होंने कहा-"मेरी दृष्टि में

हिन्दी में आज तक केवल एक ही आचार्य पैदा हुआ और वे हैं- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। यहीं तक कि मैं अपने गुरू पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी को भी 'आचार्य न कहता हूँ और न लिखता हूँ। अगर हिमालय पृथ्वी का मानदण्ड है तो हिन्दी साहित्य के मानदण्ड आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ही है।"

नामवर सिंह का उपन्यास सम्बन्धी चिन्तन 1980 से प्रमुख रूप से आरम्भ हुआ जो प्रेमचन्द का जन्मशती वर्ष था। नामवर जी ने प्रेमचन्द जन्मशती वर्ष और बाद के दिनों में भारतीय उपन्यास के उदय और विकास को पश्चिम में उपन्यास के उदय और विकास से सर्वथा भिन्न रूप में प्रस्तुत किया है। नामवर जी का स्पष्ट मत है कि पश्चिम में उपन्यास का उदय भले ही एक बुर्जा रूप में हुआ हो किन्तु भारतीय उपन्यास का विकास मुख्यत औपनिवेशिक दासता में छटपटाते हुए किसान की जीवन गाथा से हुआ है। देठ भारतीय उपन्यास मध्यवर्ग के महाकाव्य के रूप में नहीं, बल्कि ग्रामीण समाज के आख्यान (नैरेटिव) के रूप में उचित और विकसित हुआ। नामवर की भारतीय उपन्यास-संबंधी यह स्थापना एकदम नयी और मौलिक थी। हेगेल ने उपन्यास को आधुनिक मध्यवर्ग का महाकाव्य कहा था। उपन्यास के उदय के सम्बन्ध में यह कथन लक्षण लगभग सर्वमान्य था, नामवर जी ने भारतीय उपन्यास को 'किसान जीपन का महाकाव्य कहकर एक विशेष रूपबन्ध के सर्वत्र प्रथम समान जन्म पर प्रश्न खड़ा किया।

नामवर जी भारतीय उपन्यास के स्वरूप पर विचार करने के पूर्व भारत में उपन्यास के उदय और विकास की रूपरेखा से परिचित होना जरूरी समझते हैं। नावेल पर विचार करते हुए वे केवल अंग्रेजी नहीं पूरे यूरोप में नावेल के जन्म और विकास की चर्चा करते हैं। जहाँ तक नावेल शब्द का प्रश्न है. इस शब्द विशेष का सभी भाषाओं में प्रचलन नहीं है। नामवर जी ने उपन्यास को वर्णनात्मक रूम विद्या न मानकर निर्णयगत (ज्यूडिसियल) माना है। वे निर्णय का मतलब मूल्य निर्णय कहते हैं। नामवर जी दो विचार धाराओं व्यक्तिवाद और अनुभववाद का जिक्र करते है। ये नावेल को Famal Realism से जोड़ते है।

नामवर जी की विशेषता है कि वे हमें चिन्तन और विचार के लिए अनेक मुद्दे देते हैं. उन पर अपनी तार्किक राय प्रकट करते है और ओता पाठक समुदाय को पर्याप्त आधार सामग्री प्रदान करते है। उपन्यास के सम्बन्ध में उन्होंने हमारी औपनिवेशिका समझ दूर की है। इस प्रकार वे औपनिवेशिक मागस को स्वतंत्र करते है और नये सिरे से सोचने को विवश करते हैं। भारतीय उपन्यास की उनसे पहले अपनी स्वतंत्र पहचान विस्तार से किसी आलोचक ने नहीं की थी। नामवर जी ने देश की स्वतंत्रता से उपन्यास की स्वतंत्रता को जोड़ा नामवर सिंह जी की उपन्यास-सम्बन्धी धारणा अवधारणा के निर्माण में लेसली फिडलर, फ्रेडरिक जेक्सन, बेनेडिक्ट एंडरसन और हेजन डाटन की बड़ी भूमिका है।

नामवर की उपन्यास-सम्बन्धी आलोचना एक प्रकार का वैचारिक युद्ध है उपनिवेशवाद पूँजीवाद, सामन्तवाद, साम्राज्यवाद और छदम राट्रवाद के विरुद्ध। नामवर ने भारतीय समाज को प्रेमचन्द की निगाह से देखा है। अकारण नहीं है कि उन्होंने उपन्यासकारों में केवल प्रेमचन्द पर लिखा है। प्रेमचन्द के और उपन्यासों की उपेक्षा 'गोदान पर नामवर जी ने अधिक लिखा है। नामवर जी की दृष्टि में गोदान एक पोलिटिकल क्रिटिक है। नामयर की स्थापना है कि 'प्रेमचन्द की भारतीयता जीवना इतिहास के बीच विकसित हुई थी। नामवर जी गोदान को न 'मर्सिया मानते हैं, न भादों का आसमान। वे गोदान का केन्द्र बिन्दु होरी को न मानकर धनिया को मानते हैं। गोदान में गाय को नामवर जी ने एक रूपक और प्रतीक के अर्थ में देखा है। यह अनेक भावों का प्रतीक बन जाती है। होरी खुद गाय है। इसका प्रमाण है रामसेवक का यह कथन- इस संसार में गौ बनने से काम नहीं चलेगा। नामवर जी कहते हैं "गाय रखने वाला-गाय की इच्छा रखने वाला खुद गाय है। इस गाय पर एक लेख लिखा जाना चाहिए। आगे वे लिखते है प्रेमचन्द के किसान के लिए माय सुराज का प्रतीक है। होरी के लिए सुराज का मतलब था एक पवित्र पूरा समाज।"

नामवर जी की आँख वहीं पहुंचती है जहाँ अन्य आलोचकों की बहुत कम पहुँच पाती। वे कृति का नया पाठ प्रस्तुत करने वाले सर्जक आलोचक है। वे झकझोरते हैं, चुनौती देते हैं और बहस के लिए आमंत्रित भी करते है। उनकी आलोबना इसी अर्थ में संवादी है और लोकतांत्रिक भी है। नामवर जी अपने समय के हिन्दी आलोचना के मुख्य विधारक ही नहीं, बल्कि हिन्दी आलोचना की धारा की बदलने वाले विद्वान है। उन्होंने रुड़ियादिता, अंधविश्वास, कलावाद, राष्ट्र, लोकतंत्र, परम्परा, 1857 की क्रांति, उत्तरआधुनिकता, आलोचना, फासीवाद, साम्प्रदायिकता, जातीयता, विश्वसभ्यता, बाजारवाद, भाषा, छन्द, भारतीयता, रस, काव्यशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र, प्रगतिशीलता जैसे विषयों पर खूब जमकर लिखा है।

हिन्दी कहानी के विकास के आरम्भिक दौर में ही गुलेरी जी की 'उसने कहा था' जैसी सशक्त कहानी प्रकाशित हो चुकी थी, प्रेमचन्द, प्रसाद जैसे बड़े रचनाकार कहानी विद्या को समृद्ध कर रहे थे, इसके बावजूद आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य का इतिहास में 'उसने कहा था' को छोड़कर किसी दूसरी कहानी पर कोई खास चर्चा नहीं की।

हिन्दी में कथा साहित्य की आलोचना को महत्व दिया नन्ददुलारे वाजपेयी और रामविलास शर्मा ने। प्रेमचन्द की रचनाओं की विस्तृत व्याख्या इन दोनों आलोचकों ने पहली बार इस रूप में की साहित्य प्रेमियों का ध्यान हिन्दी कथा साहित्य की ओर गया। लेकिन यहाँ भी आलोचकों ने प्रेमचन्द के उपन्यासों को ही ज्यादा समझा और समझाया। कहानी पहले की तरह उपेक्षित रही। आज भी कहानी समीक्षा की किसी महत्वपूर्ण पुस्तक का नाम लिया जाता है तो उसमें नामवर सिह जी की 'कहानी नयी कहानी' का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

एक साक्षात्कार में अमरकान्त ने स्वीकार किया था कि यदि नयी कहानी की समीक्षा के लिए हम कुछ नये कहानीकार इलाहाबाद में नामवर सिंह को खाने-पीने की सुविधा के साथ एक कमरे में बन्द कर देते थे और वह कमरा तब तक नहीं खुलता था, जब तक नयी कहानी सम्बन्धी समीक्षा पर एक लेख तैयार न हो जाता। लेकिन उसी साक्षात्कार में अमरकान्त ने यह भी कहा था कि नयी कहानी के आलोचक के रूप में नामवर सिंह को इस तरह सक्रिय करना हम नये कहानीकारों की एक गलती थी। इसके मूल में नामवर जी द्वारा परिन्दे कहानी को प्रगतिशील मूल्यों, मान्यताओं की अनदेखी के बावजूद इस कहानी को प्रथम नयी कहानी कहना है।

नामवर सिंह की नयी कहानी सबन्धी उक्त स्थापना के विरोध का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके भाई और प्रख्यात कथाकार काशीनाथ सिंह का स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कहानी पर शोध निर्देशन के दौरान बलराज पाण्डेय जी को सलाह देना कि नामवर सिंह की परिन्दे सम्बन्धी स्थापना का विरोध करते हुए अमरकांत की डिप्टी कलक्टरी को नयी कहानी की पहली कृति के रूप में स्थापित करना चाहिए। नामवर सिंह यदि किसी कृति की आलोचना करते हैं तो विचारधारा को हावी नहीं होने देते। उनके लिए कृति महत्वपूर्ण है, उसकी अन्तर्वस्तु महत्वपूर्ण है, इसके साथ ही वे रचना के लिए कला पक्ष की भी अनदेखी नहीं करते।

हिन्दी में आज दलित स्त्री और आदिवासी विमर्श के बिना कोई रचना या आलोचना महत्वपूर्ण नहीं मानी जाती। नामवर सिंह जी ने सद्गति, कफन, दूध का दाम और पूस की रात कहानी की विस्तृत समीक्षा की और उनके में वक्तव्य उस समय आये, जिस समय हिंदी समाज में दलितों, स्त्रियों की स्थिति को लेकर कोई आन्दोलन नहीं था, साथ ही साहित्य में भी इन्हें लेकर कोई विमर्श खड़ा नहीं हुआ था। प्रेमचन्द्र की जिन कहानियों पर पाठकों का कम ध्यान जाता है. नामवर जी ने गुल्ली डंडा और पैपूजी जैसे कहानियों की विस्तृत व्याख्या कर हमें यह सिखाया है कि कहानी को कैसे पढ़ना चाहिए और उसकी समीक्षा के लिए किन बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए। इतना ही नहीं नामवर जी ने प्रेमचन्द के विरोध में उठने वाली मान्यताओं को खारिज करते हुए उन्हें टालस्टाय बाल्जाक और लू शून जैसे कथाकारों की कतार में स्थापित किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के हिन्दी कहानी में प्रेमचन्द्र की परम्परा का विकास नामवर सिंह ने अपने तरीके से देखा है। उनका मानना है कि प्रेमचन्द के कथा साहित्य में गाँव के किसान और मजदूर ही नहीं है, उनके यहाँ पर्याप्त मात्रा में मध्य वर्ग भी है, इसलिए नयी कहानी में यदि मध्य वर्ग की समस्याएं जोर-शोर से उठायी गयी है, तो इसे भी प्रेमचन्द के कथा साहित्य की विकास परम्परा में ही स्वीकार किया जाना चाहिए। नामवर जी ने ग्राम जीवन पर आधारित कहानियों को भी अपनी समीक्षा में अपेक्षित महत्व दिया है। यदि वे शिवप्रसाद सिंह, शेखर जोशी, मार्कण्डेय और विद्यासागर नौटियाल की कहानियों की समीक्षा करते हैं तो इसलिए कि इन लेखकों ने आजादी के बाद बदले हुए गाँव के लोगों के अतिरिक्त उन कंजड़ों, मुसहरों, हिजडों और घुमंतू नर्तकों को अपनी रचनाओं के केन्द्र में रखा है, जिनकी ओर पहले के लेखकों का ध्यान नहीं गया था।

नामवर सिंह ने भीष्म साहनी, मोहन राकेश, मन्नू भण्डारी, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, रेणु, अमरकांत, मुक्तिबोध, श्रीकांत वर्मा, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती की मुख्य कहानियों की विस्तृत आलोचना के द्वारा अच्छी और नयी कहानी को विशिष्ट पहचान दी। न सिर्फ मायाबोध के स्तर पर बल्कि शिल्प की दृष्टि से भी नामवर सिंह ने कहानी में हुए परिवर्तन को रेखांकित किया। उन्होंने नए कहानीकारों की भाषा की ताजगी, नवीन बिम्बों की सृष्टि, प्रतीकात्मक और सांकेतिक शब्द योजना को लक्ष्य किया और बताया भी है।

सन 1960 के बाद कविता में आये बड़े परिवर्तन को लक्ष्य करते हुए जिस तरह उन्होंने धूमिल के साथ ही उनकी पूरी पीढी का स्वागत किया, उसी प्रकार नयी कहानी के बाद सातवें दशक में हिन्दी कहानी में आये हुए परिवर्तन को भी लक्ष्य करते हुए ज्ञानरंजन की 'फेंस के इधर और उधर', काशीनाथ सिंह की 'सुख', दूधनाथ सिंह की 'रक्तपात', रवीन्द्र कालिया की 'नौ साल छोटी पत्नी' जैसे कहानियों का संवेदना और शिल्प के आधार पर स्वागत किया। इसके साथ ही नामवर जी ने अकहानी, समान्तर कहानी, और जनवादी कहानी के नाम से चलाये गये छोटे-छोटे आन्दोलनों को साहस के साथ खारिज किया और कहानी में साहित्यिक मूल्यों को बनाये रखने की वकालत की।

(शेष अगले अंक में....)

अनुभव का अन्तःस्वर: असाध्यवीणा

अजित कुमार राय
वरिष्ठ साहित्यकार, पूर्व प्रधानाचार्य
सुभाष इंटर कॉलेज
नेरा, कन्नौज,उत्तर प्रदेश

अज्ञेय प्रयोगवाद या कि नई कविता के प्रवर्तक और प्रतिष्ठाता माने जाते हैं । अनेकायामी जीवनानुभव से सम्पन्न वे वाक् - सिद्ध सर्जक और सच्चे आधुनिक बौद्धिक कवि हैं । देश - विदेश के कृतित्व का उन्हें व्यापक अनुभव है और इस प्रकार वे सही अर्थों में एक यायावर हैं । परम्परा के भीतर से फूटती आधुनिकता ही सर्जनात्मक विकास का व्यंजक होती है । पश्चिमी विचारधाराओं और साहित्यिक उत्क्रान्तियों के प्रति यथेष्ट सहानुभूतिशील होते हुए भी उनका वैचारिक व्यक्तित्व सर्वथा भारतीय रहा है । वे भारतीय आधुनिकता का एक नया भाष्य रचते हैं और हिन्दी कविता का पूरा व्याकरण बदल देते हैं । उनकी कविता में तत्सम के पड़ोस में तद्भव मौजूद है और वे तद्भवता से कविता निचोड़ने में क्रमशः कुशल होते गए हैं । कृष्णदत्त पालीवाल कहते हैं कि साहित्य के नए मूल्यों के लिए अज्ञेय के बहुस्तरीय संघर्ष का एक गौरवशाली इतिहास है ।और इतिहास से मुक्ति हमारी परम्परा की सबसे बड़ी देन है । उनकी रचनाशीलता में कोरी समसामयिकता का झाग भर नहीं है । उनकी कविता हिन्दी कविता को पुनःसम्भव बनाकर क्लासिक ऊँचाइयों की ओर उन्मुख है । नयी राहों के अन्वेषी इस कवि में अपनी पूरी समकालीन सृजन -पीढ़ी को साथ लेकर चलने का अद्भुत संकल्प है। भारतीय नवजागरण की आन्तरिक लय उनके रचना कर्म में अपनी समस्त अनुगूँजों के साथ वर्तमान है ।

अज्ञेय का जन्म पुरातत्व खुदाई शिविर में हुआ था । शायद इसी लिए भाषा का उत्खनन और शब्दों के सूक्ष्म अर्थ - संवेदनों की गहरी समझ और पकड़ उनमें सर्वाधिक है । स्वाधीनता आंदोलन में उन्होंने प्राणों की बाजी लगा दी और जेल गए किन्तु कविता को पुराने उपमानों और अप्रस्तुतों से मुक्ति दिलाने में उनकी नेतृत्वकारी भूमिका निर्विवाद है । उनके सखा प्रो. विद्यानिवास मिश्र कहते हैं कि हिन्दी की आधुनिक कविता की असाध्यवीणा तो अज्ञेय के हाथों में ही बजी है । सचमुच रसप्रवण सांगीतिक मुद्रा में कविता को नये से नये अर्थ - सन्दर्भो और अभिव्यक्ति रूपों की ओर ले जाने वाले अज्ञेय की रचनाशीलता का परिवेश सांस्कृतिक गरिमा से उद्भासित है । मिथकों और उनके उपकरणों का बड़ा ही सटीक , सार्थक और सौष्ठवपूर्ण उपयोग उनकी कविताओं में मिलेगा । रसवाद को उन्होंने रागात्मक संबन्धों के बदलाव और द्वंद्वात्मक संदर्भों की प्रासंगिकता दी । उनमें एक विशिष्ट प्रकार की समष्टिगत कास्मिक चेतना है जो उनकी रचनाओं में मानवीय औदात्य और सांस्कृतिक गरिमा की सृष्टि करती है ।

नए प्रतीकों और नये अप्रस्तुतों का सार्थक प्रयोग अर्थ - बोध की चेतना को नयी दीप्ति देता है ----

मतियाया सागर लहराया ।
तरंग की पंखयुक्त वीणा पर
पवन ने भर उमंग से गाया ।
फेन - झालरदार मखमली चादर पर मचलती
किरण - अप्सराएँ भारहीन पैरों से थिरकी ----
जल पर आलते की छाप छोड़ पल - पल बदलती ।
दूर धुँधला किनारा ।

अज्ञेय की कविताओं में बड़ी ही सटीक और तराशी हुई शब्द - योजना मिलती है जो कई बार हीरे के क्रिस्टल की भाँति सख्त बिम्बों की अवतारणा करती है । सागर और वीणा अज्ञेय के अति प्रिय काव्य - बिंब हैं । यह पंखयुक्त वीणा ही है जिसके तारों को साधते हुए कवि तारों से छनकर आती हुई शान्ति को सवेद्य पाता है और उन्हीं पंखों पर दोलायमान होते हुए " कुलिया की कटी मेंड़ से बहते जल की छुल - छुल" को निरखते हुए रस भार मेघों से स्रवित शिखर के "जल - प्रपात का प्लूत एक स्वर" सुनता है ---

और साँझ को
जब तारों की तरल कँपकँपी
स्पर्शहीन झरती है ---
मानों नभ में तरल नयन ठिठकी
निःसंख्य सवत्सा युवती माताओं के आशीर्वाद ।

इस वीणा की स्वर लिपि में समूची सृष्टि का नाद गुंफित है । इस असाध्य वीणा का आस्फालन नीरन्ध्र नक्षत्र लोक को भी कंपित करता है । किन्तु आज की तदर्थवादी सिंथेटिक कविताओं में विचारधारा का ढोल ही अधिक पीटा जाता है और लोग भूल जाते हैं कि अन्ततः कविता एक कला है जो जीवन को सम्बोधित है । जीवन में वैविध्य है । यहाँ सत् भी है और असत् भी है लेकिन महादेवी वर्मा के शब्दों में कहूँ तो प्रगतिवाद के नाम पर , सामाजिक यथार्थ के नाम पर विद्रूप यथार्थ को खोज - खोज कर बौद्धिकों ने नरक की सृष्टि कर डाला । आज यदि कोरोना संकट के संदर्भ में दिल्ली से लाखों श्रमिकों का पलायन हुआ तो हजारों वंचितों को लंगर लगाकर भोजन परोसने वाले संवेदनशील दानवीरों की भी कमी नहीं है और क्रान्तिकारी कवियों से जरूर पूछा जाना चाहिए कि इस विभीषिका में वे पुस्तक के पन्नों में क्यों दुबक गए ? कितने दलितों को अपने घर में उन्होंने शरण दी अथवा कितनों की भूख मिटाई ? रस्मी संवेदना प्रकट करने के कर्मकाण्ड से न तो उन मजदूरों का भला होगा और न ही कविता का । व्यवस्थागत विसंगतियों का विरोध अवश्य करना चाहिए किन्तु इसके लिए नैतिक शक्ति अर्जित करना पड़ेगा । इन जनवादियों ने कविता को जन - विमुख बना दिया । साथ ही ये अपने सेलेक्टिव एप्रोच के कारण न तो मरकज के मर्कट तब्लीगी जमात के धर्म थूकने पर मुँह खोलेंगे और न ही कश्मीर के लाखों ब्राह्मणों (अल्पसंख्यकों) के नृशंस हत्या और विस्थापन पर आवाज उठाएँगे । इनका पालिटिकल करेक्टनेस का धर्म खतरे में पड़ जाता है । मंगलेश डबराल के शब्दों में कहूँ तो ये उपभोक्तावादी लेखक हैं जो विज्ञप्त वस्तु का आहरण करते हैं । फैशन को सौन्दर्य मानने वाले इन महाकवियों का सौन्दर्य बोध हर खूबसूरती के खिलाफ खड़ा है । रोमानी सुरुचि को गाली समझते हुए प्रेम की मांसलता और प्रकृति के शीतल क्रोड़ को अपने काव्य - संसार से निर्वासित कर दिया था, गोया ये जीवन का हिस्सा न हों। अव्वल तो काव्य संसार शब्द की स्वायत्तता में ही इन्हें कलावादी भटकाव नजर आता है । आखिरकार कविता के कलेवर की ज्यामितीय संरचना में भूख या पेट को कितनी जगह घेरनी चाहिए ? अज्ञेय की काव्य - चेतना यथार्थ के सार्वजनीक संदर्भों की आत्मगत पीड़ा तक पहुँचती है --

मैं यह नहीं चाहता
कि मेरे घर में रोशनी हो ,
मैं तो यह चाहता हूँ कि
रोशनी के घेरे में मेरा घर हो ।

यह मंगलाशा कितनी स्पृहणीय है ! इस समष्टिमूलक श्रेयस् की सिद्धि संकल्पना से गर्भित पावन ऋचा पर व्यंग्य करते हुए पंकज चतुर्वेदी कहते हैं कि इस शुभाकांक्षा का जन्म किसी जगमग इलाके में हुआ होगा । क्या समृद्धि कोई अभिशाप है ? और क्या प्रोफेसर पंकज या डा. तुलसीराम कोई गरीब व्यक्ति हैं ? जैसे कोरोना निरोध के साइड इफेक्ट के रूप में दिल्ली से मजदूरों के पलायन के समय बहुत से बुद्धिजीवी लाकडाउन को ही गलत ठहराने लगे थे । लगने लगा था कि भूख का हिरण्याक्ष पूरी पृथ्वी को समुद्र में डुबो देगा ।

काव्य - कला ही वह असाध्यवीणा है जिसे पकड़ तो कोई भी लेता है लेकिन बजती वह उसी के हाथ में है जो सच्चा स्वरसिद्ध साधक होता है । यह भीमसेन जोशी , हरिप्रसाद चौरसिया , बिस्मिल्लाह खाँ और जाकिर हुसैन की तरह एक सम्पूर्ण जीवन - साधना है , शौक पालने वाले लिक्खाड़ और छपासलिप्सु या कलमी कवियों की अखबारनवीसी से भिन्न वृत्ति है जो सर्वात्मना समर्पण और उत्सर्ग की मांग करती है । न जाने कितने त्यौहारों की होली जलाकर तो एक कविता निर्मित होती है ।

अज्ञेय की कविताओं में विराट के प्रति समर्पण संलक्ष्य है । समष्टि के प्रति आत्मदान उनकी विशिष्ट कविताओं का सर्वनिष्ठ संदेश रहा है । व्यष्टि और समष्टि के बीच एक संतुलित समीकरण की खोज उनकी प्रौढ़ समझ का परिचायक है । वे काव्य - वीणा नहीं बजाते , स्वयं को वीणा को सौंप देते हैं । वीणा स्वयं को अभिव्यक्त करती है । व्यवस्था सापेक्ष निजत्व का अन्वेषण , स्वयं का परिशोध उनकी काव्यानुभूति में विन्यस्त है । असाध्यवीणा में एक हल्का कथानक अनुस्यूत है जो कवि के निर्व्यास भाव बोध को सघन संरचना में रूपायित करता है । अथवा यूँ कहें कि एक कथात्मक फन्तासी के शिल्प में कथ्य को विन्यस्त किया गया है और फ्लैशबैक (पूर्वदीप्ति) या संस्मृति शैली के माध्यम से निखिल विश्व की काव्योन्मुखता को संकेतित किया गया है । सृष्टि का प्रत्येक कार्य व्यापार कविता का वर्ण्य विषय बनता है । कोमलकान्त पदावली में मुक्तछंद की लयवहता आस्वाद्य है । दिनकर जी से बातचीत में अज्ञेय कहते हैं कि क्रान्ति आवर्त्त है , उसको स्थायी धारा मानना भूल होगी । हर समय खड्गहस्त रहना भारतीय प्रज्ञा के आनुवंशिक उत्तराधिकार को स्वीकार नहीं । किन्तु छिन्नमूल दृष्टि तो शान्ति में भी क्रांति का ही राग आलापती रहती है । वैसे नगाड़ो की आवाज में आलाप का अवकाश कहाँ ? किन्तु असाध्यवीणा के स्वर में सब अलग अलग संगीत सुनते हैं और सबकी पृथक इयत्ता जागृत होती है तो यहाँ लोहे पर सधे हथौड़े की सम चोटें भी सुनाई पड़ती हैं। केदारनाथ अग्रवाल भी मजदूरों की कर्मलीनता में एक लय देखते हैं ---

मैंने उसको जब भी देखा, लोहा देखा ।
लोहे जैसा चलता देखा ,
लोहे जैसा ढलता देखा ।

यह संपादित काव्यांश है । कविता की अन्तर्पाठीयता या अर्थ - बोध की भिन्न चेतना का यह सिद्धान्त रामचरितमानस के "जाके रही भावना जैसी " की अन्विति परंपरा में है । रावण प्रेम को राम की दुर्बलता समझता है ---

तव प्रभु नारि विरह बलहीना ।
अनुज तासु दुःख दुखी मलीना ।।

किन्तु राम के लिए प्रेम कर्मक्षेत्र को उद्भासित करने वाली ऊर्जा है और वही रावण का समूल नाश करती है। यह विपर्यय मानस की थीम में भी लक्षित होता है । रावण मनुष्य (मारीच) को पशु (कंचनमृग) बना देता है और राम पशुओं (शाखामृगों) को मनुष्य बना देते हैं , मानवीय मर्यादा में विन्यस्त करते हैं -

अंगदादि मारुतसुत वीरा ।
धरें मनोहर मनुज शरीरा ।।

अज्ञेय परंपरा के निषेध के स्थान पर उसे युगानुरूप मोड़ देने के कायल हैं । रागात्मक संबन्धों की प्रणालियाँ बदल गई हैं , इसे अज्ञेय ने बखूबी पहचाना और कविता का नया मुहावरा गढ़ा । परंपरा के हजारों साल पुराने पेड़ पर आज का फूल खिला है । यह बोधिवृक्ष सनातन है ------

अति प्राचीन किरीटी तरु से इसे गढ़ा था ।

बज्रकीर्ति ने इस अभिमंत्रित वीणा का निर्माण उत्तराखंड के हिमगिरि की उपत्यका में पल्लवित महावृक्ष के दारु से किया था जो झारखंड का अग्रज और महच्छाय था । यह बज्रकीर्ति की जीवन भर की साधना का प्रतिफल था । हिमालय ऋषियों की तपोभूमि है । अतः एक विराट मौन इस प्रलम्बित कविता की संरचना में आद्योपान्त गुंफित है । इस मौन के आकाश में असंख्य ध्वनियाँ उत्सृष्ट होती हैं, जैसे सारे आकार निराकार से ही निष्पन्न होते हैं। अज्ञेय के अनेकायामी जीवनानुभवों का सारांश इसमें बोलता है । किन्तु डा. नगेन्द्र के कविता के रूपबंध में विन्यस्त प्रक्रिया और परिणति के द्वैत पर सवाल उठाने वाले नामवर सिंह को असाध्यवीणा का अन्त फीका लगता है । स्वयं अज्ञेय ने कभी सवाल उठाया था कि प्रायः कविता का विषय नया होने पर भी उसकी वस्तु पुरानी ही होती है । अन्तर्वस्तु तो प्रस्तुत कविता का भी पुराना ही लगता है लेकिन वह निरन्तरता का नवाचार निर्मित करता है और सर्जनात्मक भाषा में ---

उसके कानों में हिम शिखर रहस्य कहा करते थे अपने ,
कंधों पर बादल सोते थे ,
कोटर में भालू बसते थे ,
केहरि उसके वल्कल से कंधे खुजलाने आते थे ।

हिमालय की चट्टानों को फोड़कर उपजे इस छायाद्रुम की अपरिमित ऊँचाई अपने चाक्षुष बिम्ब के अतिरिक्त इस बात का संकेतक है कि अपेक्षित ऊँचाई अर्जित कर लेने के बाद यह अस्तित्व अपने रहस्य स्वयं हमारे सम्मुख उद्घाटित कर देता है । मुझे भवभूति के उत्तररामचरितम् का एक श्लोक याद आ रहा है ----

कण्डूलद्विप गण्डपिंड कषणोत्कम्पेन संपातिभिः
घर्मस्स्रंस्रित बंधनैश्च कुसुमैरर्चन्ति गोदावरीं ।
छायापस्किरमाणविष्किर मुखव्याकृष्ट कीटत्वचः,
कूजत्क्लान्त कपोतकुक्कुटकुलाः कूले कुलायद्रुमाः ।

जहाँ हाथी अपनी खुजली मिटाने के लिए गण्डस्थल को वृक्ष से रगड़ते हैं और दोपहर की धूप के कारण शिथिल वृन्त वाले फूल गोदावरी में झड़ रहे हैं मानो नदी की अर्चना कर रहे हों । उसकी छाया में ग्रीष्म के प्रचंड उत्ताप के कारण क्लान्त कपोत और कुक्कुट के कुल कूजन कर रहे हैं और पेड़ों की छाल से कीड़े निकालकर खा रहे हैं । तो द्विप की जगह केहरि हो गया है लेकिन यह कल्पना तो कवि ने भवभूति से उधार लिया है । तथापि अस्पर्श छुवन से वीणा के तार छूने वाले अज्ञेय जीवन के अनकहे सत्य के साक्षी हैं ।और उनके पास अपना नया संदर्भण कौशल है ----

किसी का सत्य था ,
मैंने संदर्भ से जोड़ दिया ।

इसीलिए वे आलोचकों के लिए अबूझ पहेली बन जाते हैं -----

मैं वह धनु हूँ ,जिसे साधने में
प्रत्यंचा टूट गई है ,
स्खलित हुआ है बाण ,
यद्यपि ध्वनि दिग्दिगंत में फूट गई है ।

तो इस वीणा का वादक गुफा गेहशायी केशकंबली प्रियंवद है जो अपने केश का ही कम्बल बिछाकर आसन पर बैठता है । कितना प्रतीकात्मक विनियोजन है ! सिर के बौद्धिक रेशे ही बिछौना हैं ।और बौद्धिक चेतना जब भाव समाधि में डूबती है , तभी कला में सांगीतिक सम्मोहन पैदा होता है । किसी प्रियंवद की वाणी में ही संगीत लिपियाँ पढ़ी जा सकती हैं । याद आती है किशोर काल में बी. बी. सी. लंदन से समाचार - विश्लेषक शकुन्तला चंदन की आवाज । कवि को थोड़ा शिष्ट , शालीन और प्रियंवद होना चाहिए । किन्तु आज फेसबुक पर मर्यादा के सारे सेतुबंध टूट चुके हैं । तो प्रियंवद कंबल पर अभिमंत्रित एक अकेलेपन में डूब गया था और नीरव एकालाप की मुद्रा में वीणा के मूल उत्स उस किरीटी तरु को संबोधित करते हुए उस महावृक्ष की रचना - प्रक्रिया से गुजरने लगा ------

ओ विशाल तरु !
शत सहस्र पल्लवन - पतझरों ने जिसका नित रूप सँवारा ,
कितनी बरसातों कितने खद्योतों ने आरती उतारी ।
अनचीन्हे खग - कुल की मोद भरी क्रीड़ा - काकलि
डाली - डाली को कँपा गई ।

मुझे अपनी ही नास्टेल्जिक भाव बोध की कविता की पंक्तियाँ याद आ रही हैं ----

पेड़ों पर वह ओल्हा पाती,
शाख आज भी काँप रही है
मर - मर कर जीने का दर्शन
कहाँ कबड्डी भाँप रही है ?
शीशे की रंगीन गोलियों का
वह टूटा प्रिज्म कहाँ ?
लट्टू नहीं, नाचती धरती का
वह ग्लोबल रिद्म कहाँ !
खलिहानों के गंध पिरामिड टूट गए ।

आज कविता के खेत - खलिहान का भी यही हाल है । निर्गंध फूल गमलों में खिलाए जाते हैं और हार्वेस्टर से काटने की चेष्टा होती है । कविता खेत - खलिहान से निकलकर महानगरों के सोडियम लाइट और हैलोजन बल्ब के चकाचौंध में अपना वजूद तलाशने लगी ----

इस तरह मौसम बदलता है ,
बताओ क्या करें ,
शाम को सूरज निकलता है,
बताओ क्या करें ?

प्रियंवद को घनी रात में महुए का चुपचाप टपकना याद आता है । जैसे अवध बिहारी श्रीवास्तव कहते हैं ----

सिल्क लिहाफों में घुस जाते ,
फटी रजाई वाले दिन ।

प्रियंवद को कुहरे में छनकर आती पार्वती गाँव के उत्सव - ढोलक की थाप और गड़ेरियों की वंशी की दूरागत रागिनी सुनाई पड़ती है और वीणा की ध्वनि में श्रुतिगोचर होता है संथाली झूमर का लंबा कसक भरा आलाप । ओस बूँद की ढरकन से लेकर गंगा में रेतीले कगार का छप् - छड़ाप् गिरना भी उनकी काव्यानुभूति में अन्तर्भुक्त है । चीड़ वनों की अंध गंध उन्मद से अभिभूत फुलसुँघनी की आतुर फुरकन ही नहीं , झिल्ली की झनकार में संसृति की साँय - साँय भी सुनता है । इस प्रकार वह जालिक श्रोताओं पर हेम तारों का जाल डाल रहा था ।सम्मोहन की वीणा झनझना उठी और संगीतकार की आँखों में ठंडी पिघली ज्वाला सी झलक गई । राजमुकुट सहसा हल्का हो आया था । मैंने भी कुबेरनाथ राय की नीली आँखों में वही सम्मोहन देखा था । जब सब कुछ को अपने जाल में समेट लेने वाले इस संगीत के विश्वव्यापी जादुई प्रभाव से सभी सभासद झूम उठे तो राजा और प्रजा की समेकित श्लाघा पर प्रियंवद प्रौढ़ प्रतिक्रिया देते हैं कि इसमें मेरा कुछ भी श्रेय नहीं है ।

मैं तो शून्य में डूब गया था -
वह तो सब कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य , अनाप्त , अद्रवित , अप्रमेय
जो शब्दहीन सबमें गाता है ।

इस प्रकार कठिन विषमताओं के जीवन में लोकोत्तर सुख का स्पंदन भरते हुए यह वाणी की वीणा मौन हो जाती है और इस मधुकण से , ओस कणों से सीझकर मेरे भी वस्त्र श्लथ हो गए हैं । हमें भी समय के तेज भागते पहियों में लय खोजना होगा ।क्योंकि हमें थकाने वाली कविता नहीं चाहिए । हम जीवन - संघर्षों की थकान दूर करने और नयी ऊर्जा पाने के लिए कविता के पास आते हैं ।

आग उगलता आसमान

मनोज कुमार सिंह
साहित्यकार /उप सम्पादक
कर्मश्री मासिक पत्रिका
मऊ, उ.प्र.

मध्य जून तक सम्पूर्ण उत्तर भारत मानसूनी हवाओं की जद में आ जाता हैं। परन्तु इस बार दो तिहाई जून का महीना बीत गया पर मानसून का कहीं अता-पता नहीं है। मानसून के रूठने से वातावरण में तापमान अप्रत्याशित रूप से बढता जा रहा है। बढते तापमान के कारण पड रही भयंकर गर्मी से लोग-बाग बिलबिलाने लगें हैं और संगमरमर के मकान लगभग खौलने लगे हैं। इस अप्रत्याशित गरमी और लू के थपेडों से पेड पौधे भी झुलसने लगे। इस अप्रत्याशित गरमी और लू के थपेडों से होने वाली मौतों ने कोरोना काल की याद ताजा कर दिया हैं। पूरी रात घटते-बढते चाँद और टिमटिमाते सितारों से भरे- पूरे जिस आसमान को रात भर एकटक निहारते- निहारते मन नहीं भरता उस आसमान से दिन में नजर मिलाने की हिम्मत नहीं हो रही हैं। अगर हम सामूहिक रूप से गम्भीरता के साथ सजग और सचेत नहीं हुए तो भविष्य में हमारा आसमान आगउगलने लगेगा । इसलिए आज हमें फिर से अपनी पृथ्वी, प्रकृति, पर्यावरण और विकास की वर्तमान संकल्पना के बारे में गम्भीरता से जानने समझने और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल करने पर चिंतन मनन करना होगा। आज जीवाश्म ईंधन का प्रयोग निरंतर बढता जा रहा है। जिसके कारण पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता। ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव से धरती और समन्दर दोनों गरम होते जा रहे हैं। अत्यधिक गरमी बढने से सूक्ष्म जीव जन्तुओं और कीडो-मकोडो के जीवन पर संकट मंडराने लगें हैं। यह हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अशुभ संकेत है। सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइनस्टाइन ने कहा था कि-केवलकीडे-मकोड़े तीन-चार वर्षों के लिए खत्म हो जाए तो दुनिया पूरी तरह समाप्त हो जाएगी।

आज से लगभग साढे चार अरब वर्ष पहले पृथ्वी भी अन्य ग्रहों की तरह आग का दहकता हुआ गोला थी। परन्तु पर्यावरण में कुछ रासायनिक क्रियाएं हूई तदुपरान्त पृथ्वी ठंडी हूई बादल बने बारिश हूई तथा पृथ्वी पर जल भराव हुआ। इन्हीं जल भरावो में जीवन की सम्भावना बनी। इस तरह का कुदरती करिश्मा केवल पृथ्वी के साथ हुआ। इसलिए सौरमण्डल के सभी नौ ग्रहों में केवल पृथ्वी पर जीवन और प्रचुर मात्रा में जैव विविधता पाई जाती हैं। इसलिए पृथ्वी को अद्भुत ग्रह कहा जाता हैं। पृथ्वी समस्त जीवों का पालन पोषण तो करती हैं मनुष्य के शौक श्रृंगार को भी पूरा करती हैं। मनुष्य सहित समस्त जीव जंतुओं को स्वस्थ जीवन प्रदान करने वाली पृथ्वी ही अगर अस्वस्थ, प्रदूषित और कुपोषित हो गई तो हमारी भावी पीढ़ियों का जीवन संकट में पड जायेगा। पृथ्वी अनगिनत जीव जंतुओं का प्रसव प्रांगण के साथ-साथ सभी प्राणियों का क्रीडांगन भी हैं। विकास की अंधी दौड़ में मनुष्य जिस तरह प्राकृतिक संसाधनों का निर्ममता पूर्वक शोषण कर रहा है उससे सम्पूर्ण पृथ्वी को आच्छादित करने वाला पर्यावरण निरन्तर प्रदूषित होता जा रहा हैं। अगर प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन इसी तरह जारी रहा और इसी रफ्तार से हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता रहा तो भावी पीढियों की किलकारियों के स्वर , भौरौ के गुंजन, पक्षियों के कलरव और दिगदिगंत तक गुंजित होने वाले गीतों के स्वर मद्धिम हो जायेगे । इसलिए अपनी प्यारी पृथ्वी और पृथ्वी के पर्यावरण को बचाना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।बुलेट ट्रेन की रफ्तार से बेशुमारदौलत कमाने की आसमानी महत्वाकांक्षा रखने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने लगभग पूरी पृथ्वी को अपनी मुट्ठी में भींच लिया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा जिस निर्मम्ता और निर्लज्जता से प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन किया जा रहा है उससे हवा, पानी, धरती और आसमान बुरी तरह प्रदूषित होते जा रहे हैं। इस तरह हमारी पृथ्वी और पर्यावरण के अस्तित्व पर संकट आ गया हैं। पृथ्वी के अस्तित्व को बचाने की गरज से अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड नेल्सन ने 1970 मे पृथ्वी दिवस मनाने की परिकल्पना प्रस्तावित की। तबसे यह परम्परा स्थापित हूई कि- हर वर्ष 22 अप्रैल को विश्व के सभी देश पृथ्वी दिवस के रूप में मनायेगे।

इसी तरह पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए हर वर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह सर्वविदित तथ्य हैं कि- विकास करने और खुशहाल जीवन जीने में प्राकृतिक संसाधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परन्तु इन संसाधनों का मूर्खतापूर्ण उपभोग और उपयोग अनगिनत प्रकार की सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएं पैदा कर सकता हैं। इसलिए भावी पीढियों को ध्यान में रखते हुए विकास की योजनाए निर्धारित करनी होगी तथा संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है। इसलिए प्रायः अत्यंत प्राचीन काल से प्रत्येक समाज में चिंतक और विचारक संसाधनों के संरक्षण पर अपने विचार प्रकट करते रहे हैं। इस संबंध में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा है कि- प्रकृति में प्रत्येक की आवश्यकता पूरी करने के लिए सबकुछ है परन्तु किसी की लालच को पूरा करने के लिए नहीं। अर्थात हमारे पेट भरने के लिए बहुत है लेकिन पेटी भरने के लिए नहीं। महात्मा गाँधी के अनुसार संसाधनों के ह्रास्व के लिए स्वार्थी व्यक्ति तथा आधुनिक प्रौद्यौगिकी की शोषणकारी प्रवृत्ति जिम्मेदार हैं । इसलिए वह व्यापक जन भागीदारी द्वारा लघु कुटीर उद्योग धंधों पर आधारित अर्थव्यवस्था के पक्षधर थे। अंतराष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्थित तरीके से संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल और संसाधन संरक्षण की वकालत 1968 मे क्लब ऑफ रोम ने की। इसके बाद 1974 मे शुमेसर ने अपनी पुस्तक "स्माल इज ब्यूटीफुल " में इस विषय पर गांधी जी के दर्शन को एक बार फिर से दोहराया हैं। 1987 मे ब्रुन्ड्टलैंड आयोग रिपोर्ट द्वारा वैश्विक स्तर पर संसाधन संरक्षण में मूलाधार योगदान किया गया। इस रिपोर्ट ने सतत् पोषणीय विकास (Sustainable Development) की संकल्पना प्रस्तुत की और संसाधन संरक्षण की वकालत की। सतत् पोषणीय विकास का अर्थ है भावी पीढ़ियों के भविष्य को ध्यान में रखकर और पर्यावरण कोई क्षति पहुंचाएं बिना संसाधनों का प्रयोग करना। तीव्र औद्योगीकरण, नगरीकरण और आधुनिकीकरण की चाहत में पृथ्वी के प्राकृतिक भूगोल ,भूसंरचना भू-आकृति और भौगोलिक विन्यास को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया गया। इन चाहतो में पागल मानवीय महत्वाकांक्षाओं ने जल प्रबंधन के अधिकांश परम्परागत निर्मितियों कुऑ तालाब पोखरे जोहड़ और बावडियो को बेरहमी से पाट दिया गया।

इसका स्वाभाविक परिणाम यह देखने को मिलता है कि- आज देश के मेगा शहर अत्यधिक जल भराव के शिकार हैं तो ग्रामीण क्षेत्रों में भौमिक जल स्तर काफी नीचे चला गया है। इसलिए भारत के लगभग छह लाख गांवो में जल संकट गहराता जा रहा हैं। जल संकट के अतिरिक्त औद्योगिक विकास शहरीकरण और नगरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध शोषण हुआ है। इस अंधाधुंध शोषण के फलस्वरूप पारिस्थितिकीय असंतुलन, भूमंडलीय तापन, ओजोन परत का क्षरण पर्यावरण प्रदूषण और भूमि निम्मनीकरण जैसी समस्याएं उत्पन्न हुई है।

बेतहाशा बढती जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए अधिक अनाज उत्पादन का दबाव बढता जा रहा हैं। अधिक अनाज उत्पादन के लिए अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों, प्रयोग, खरपतवारनाशी और कीटनाशक दवाओं के अत्यधिक प्रयोग के कारण हमारी धरती अत्यधिक प्रदूषित होती जा रही ह हैं और भूमि की गुणवत्ता में निरंतर गिरावट आती रही। जिसके फलस्वरूप अनगिनत बीमारियाँ पाँव पसार रहीं हैं तथा हमारी समृद्ध जैव विविधता क्षीण होती जा रही हैं। अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों, खरपतवार नाशी और कीट नाशक दवाओं के प्रयोग के कारण अनगिनत जीव जंतु और अनगिनत वनस्पतियां विलुप्त होने के कगार पर पर हैं। इसलिए जिस तरह हम अपने लिए अपने सपनों के घर की देखभाल करने के लिए चितिंत रहते हैं उसी मनुष्य सहित समस्त जीव जंतुओं के प्राकृतिक आवास पृथ्वी के बारे में भी चिंतन करना चाहिए।

जगन्नाथ पुरी रथ यात्रा

नीलांचल निवासाय नित्याय परमात्मने, बलभद्र सुभद्राभ्याम जगन्नाथाय ते नमः

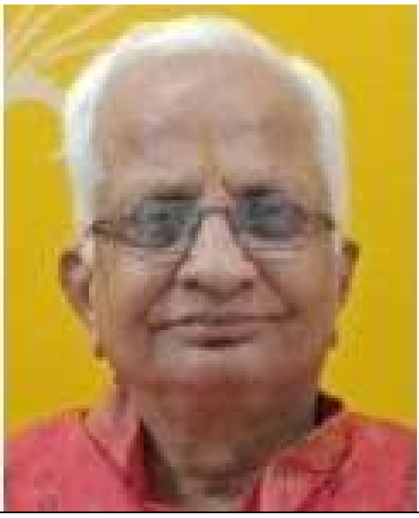

गोवर्धनदास बिन्नाणी "राजा बाबू"
प्रबुद्ध चिंतक एवं राष्ट्रसेवक
बीकानेर, राजस्थान

भारत के उड़ीसा राज्य में पुरी में स्थित प्रसिद्ध भगवान जगन्नाथ मंदिर भक्तों के लिए एक प्रमुख आस्था रखता है। यह हिन्दू धर्म के चार प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है, और यहा पर वार्षिक रथ उत्सव या रथ यात्रा का आयोजन किया जाता है जो विश्व भर में प्रसिद्ध है। यह मंदिर आस्था का केंद्र होने के साथ-साथ अपने कुछ आश्चर्यो से सबको अचंभित भी कर देता है।

एक पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान विष्णु ने राजा इंद्रद्युम्न को आशीर्वाद दिया था जिसके बाद ही उन्होंने इस पवित्र मंदिर का निर्माण करवाया था और भगवान विष्णु के आशीर्वाद से उन्हें अपने सपनों में नीला माधव को खोजने के लिए मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था।

एक दिन नदी में पवित्र डुबकी लगाने के दौरान, राजा इंद्रद्युम्न ने एक लकड़ी की छड़ी को पानी में तैरते हुए पाया। तब भगवान विष्णु ने राजा को ऐसे संकेत दिये की पानी में तैरने वाली छड़ी उनका दिल है, जो हमेशा के लिए इस भूमि पर रहेगा। तब राजा ने भगवान की आज्ञा अनुसार उस छड़ी के भगवान जगन्नाथ के रूप में मंदिर में स्थापित किया लेकिन उन्होंने कभी भी किसी को उस छड़ी को देखने या उसे छूने की अनुमति नहीं दी थी।

जगन्नाथ मंदिर के अद्भुत रहस्य, पौराणिक मान्यताओं के अनुसार ऐसा माना जाता है कि जब पांडवों ने स्वर्ग के लिये यात्रा की शुरुवात की, तो सप्त ऋषियों ने उन्हें 'मोक्ष' को प्राप्त करने के लिये सबसे पहले 'चार धाम' की यात्रा को करने की सलाह दी। पुरी में स्थित भगवान जगन्नाथ मंदिर 'चार धाम' के पवित्र स्थानों में से एक है। भगवान जगन्नाथ जी की मूर्ति हमेशा से लोगों के लिए वर्जित रही है, और भक्त उनके दर्शन केवल एक विशेष अवधि के लिए ही कर सकते हैं।

इन सभी तथ्यों के अलावा भगवान जगन्नाथ मंदिर के अद्भुत रहस्य के लिए भी जाना जाता है जो किसी भी वैज्ञानिक व्याख्या के एकदम विपरीत हैं। इन सभी रहस्यों के पीछे लोगों का यह मानना है कि ये सभी रहस्य वास्तव में भगवान जगन्नाथ का ही आशीर्वाद है। इन सभी आश्चर्यो का अनुभव करने के लिये आपको इस दिव्य स्थान की यात्रा करने की आवश्यकता है।

मंदिर का झंडा जो हमेशा हवा की उल्टी दिशा मे लहराता है

जगन्नाथ मंदिर के अद्भुत रहस्य है की मंदिर के शिखर पर लगा झंडा अजीब तरह से हमेशा हवा की विपरीत दिशा में ही लहराता है। हवा के विपरीत दिशा में लहराता हुआ झंडा सभी वैज्ञानिक तर्कों को अस्वीकार कर देता है, और यह आपको यह मानने पर विवश कर देता हैं कि विज्ञान की तुलना में भी कुछ ऐसा बल है जो बहुत अधिक शक्तिशाली है।

मंदिर के शिखर पर लगा सुदर्शन चक्र

जगन्नाथ मंदिर के अद्भुत रहस्य, यह चक्र वास्तव में 20 फीट ऊंचा है और इसका वजन एक टन है। इसे मंदिर के ऊपर शिखर पर लगाया गया है। लेकिन इस चक्र के बारे में सबसे दिलचस्प बात यह है कि आप इस चक्र को पुरी शहर के किसी भी कोने से देख सकते हैं, और यह हमेशा आपको अपने सामने ही दिखाई देगा। चक्र का स्थान और उसकी स्थिति के पीछे की इंजीनियरिंग आज भी एक रहस्य है क्योंकि आपकी किसी भी स्थिति के बावजूद, आप हमेशा यह महसूस करगे कि चक्र की स्थिति आपकी ओर ही है।

कोई भी विमान और कोई भी पक्षी मंदिर के ऊपर से नहीं उड़ता

आपको यह जानकर और भी आश्चर्य होगा कि कोई भी पक्षी या विमान इस मंदिर के ऊपर से नहीं उड़ते हैं। इसके विपरीत, ऐसा चमत्कार भारत के अन्य दूसरे किसी भी मंदिर में दुर्लभ है। यह साइट वास्तव में एक नो-फ़्लाइ ज़ोन है, जिसे किसी भी राज्य शक्तियों के द्वारा घोषित नहीं किया गया है, लेकिन इसके पीछे कुछ दैवीय शक्ति कारण है। अभी तक इस रहस्य का स्पष्ट रूप से किसी भी प्रकार का कोई स्पष्टीकरण मौजूद नहीं है। इसलिये यह अभी तक एक रहस्य ही बना हुआ है।

जगन्नाथ मंदिर की संरचना

इस मंदिर की संरचना ऐसी है कि यह दिन के किसी भी समय पर अपनी छाया को नहीं डालता है। इस कारण को अभी तक भी नहीं समझा जा सका है कि क्या यह कोई एक इंजीनियरिंग चमत्कार है या कोई दैवीय घटना है जिसे केवल ईश्वरीय शक्ति के द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है।

मंदिर के सिंघद्वार का रहस्य

जगन्नाथ मंदिर में चार दरवाजे हैं, और सिंघद्वार मंदिर मे प्रवेश के लिऐ मुख्य द्वार है। जब आप सिंघद्वार के माध्यम से मंदिर मे प्रवेश करते हैं, तो आपको समुद्र की लहरों की आवाज़ स्पष्ट रूप सुनाई देती हैं, लेकिन जब आप एक बार सिंघद्वार को पार कर लेते है तो लहरों की आवाज सुनाई देना बंद हो जाती है, लेकिन यदि आप बस एक मोड़ लें और उसी दिशा में वापस चलें, तो आपको लहरों की आवाज़ वापिस सुनाई देगी। जब तक आप मंदिर के अंदर रहेंगे तब तक आपको लहरों की आवाज़ नहीं सुनाई देगी।

समुद्र से आने वाली हवा का रहस्य

जगन्नाथ मंदिर के अद्भुत रहस्य, आपने दुनिया के किसी भी हिस्से में यह आपने देखा होगा कि दिन के समय मे हवा समुद्र से जमीन पर आती है, और यह शाम के समय भूमि से समुद्र की ओर बढ़ती है। हालांकि इस विषय में यह भौगोलिक कानून पूरी मे उल्टा हैं। यहाँ पर सब कुछ प्रकर्तिक नियमो के विपरीत ही होता है।

1800 साल पुरानी एक परम्परा

यहाँ हर दिन एक पुजारी मंदिर के शिखर पर चढ़ता है, झंडा बदलने के लिए यह मंदिर 45 मंजिला इमारत जितना ऊंचा है। यह अनुष्ठान 1800 वर्षों से निरंतर चल रहा है। इस विषय में यह माना जाता है कि यदि यह अनुष्ठान कभी छूट गया तो यह मंदिर अगले 18 वर्षों के लिये बंद हो जायेगा।

प्रसाद का रहस्य जो कभी कम नहीं पड़ता

भगवान जगन्नाथ के मंदिर में कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता। हर दिन के आधार पर, यह रिकॉर्ड बताते हैं कि मंदिर में 2,000 से 20,000 तक भक्त दर्शन करने आते हैं। लेकिन, इस मंदिर में पकाये जाने वाले प्रसाद की मात्रा कभी भी कम नहीं पड़ती और यह पूरे साल भर एक ही रहती है। यहाँ यह जगन्नाथ मंदिर के अद्भुत रहस्य है, की प्रसाद कभी भी बर्बाद नहीं होता है या ना ही किसी भी दिन यह कम पड़ता है।

प्रसाद को पकाने की तकनीक

भगवान जगन्नाथ के मंदिर में स्थित यह रसोई दुनिया की सबसे बड़ी रसोई मानी जाती है। इस रसोई में एक साथ 500 के करीब रसोइये और 300 के आस-पास इनके सहयोगी मिलकर भगवान के लिये प्रसाद को तैयार करते हैं। यहाँ प्रसाद को पकाने में जलाऊ लकड़ी व मिट्टी के बर्तनो का उपयोग किया जाता है। 7 मिट्टी के बर्तनों को एक के ऊपर एक रखा जाता है। इसमें सबसे दिलचस्प बात यह है कि सबसे ऊपरी रखे बर्तन की सामग्री सबसे पहले पक जाती है, उसके बाद नीचे के बर्तन में रखी सामग्री पकती है।

पंचतत्व परमेश्वर

जैव विविधता संरक्षण पर केन्द्रित नुक्कड़ नाटक

लेखक : विनोद मिश्र 'सुरमणि'

विनोद मिश्र 'सुरमणि'

प्रसिद्द लोक कलाकार

दतिया, मध्य प्रदेश

पात्र परिचय :

बरगद - वृक्षों का राजा

नीम - मंत्री

पीपल - वृक्षों के गुरू

पंचतत्व - क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर

साधू - संत व्यक्ति

सूत्रधार - संख्या-2

लकड़हारा - मानव प्रतीक

(प्रथम दृश्य)

(दो व्यक्ति एक साथ चले आ रहे है एक साधू बैठा भजन कर रहा है)

साधू : क्षिति, जल, पावक गगन समीरा । पंच रचित यह अधम शरीरा ।।
सूत्रधार : महाराज की जय हो
सूत्रधार : पाय लागू साधू महात्मा ।
साधू : प्रसन्न रहो । बालक सदा प्रसन्न रहो। वोलो कहाँ से आ रहे हो और कौन हो तुम ।
सूत्रधार-1 : बाबा जू मेरा नाम तोताआम मीठा मेरा स्वाद
चूसो, खाओ या बनाओ, प्यारा सार सलाद
प्यारा सार सलाद बढाऊ आँखों की मैं ज्योति
आँख तुम्हारी ऐसे चमके सागर में ज्यौ मोती ।
साधू : सही कहा भैया । तोताआम वो कहते है कि
गाजर आम पपीता खाओ
अंधेपन को दूर भगाओ।
और भैया आप कौन है।
सूत्रधार-2: महाराज कड़वा लागू पर मेरे गुन, मुझ में भरे अनेक
दातून, साबुन मेरा करले उसका जीवन नेक
उसका जीवन नेक। जो समझे मुझको बड़ा हकीम
कहते मुझको कड़वा काला हूँ मैं सीधा नीम ।
साधू : सही कहा तुमने तुम्हारे अन्दर वो तत्व है जो मनुष्य ही नहीं कई प्राणियों के लिये लाभदायक होते है ।
नीम और तोताआम क्या तुम्हें है मुझसे काम ?
दोनो : नहीं नहीं महाराज आपसे नही हमें है काम ।
हमतो विचरण करते वन में फिरते परहित काम ।
साधू : वौ कैसे ?
सूत्रधार : महाराज आपको पता ही है कि कई वर्षों से सूखा पड़ रहा है।
पेड़ पौधे जीव जन्तु, कीड़े, मानव, मछली ।
पानी के बिन नही बचेगा इनका जीवन असली ।
साधू : सही कहा तुमने ।
रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून।
सूत्रधार : पर महाराज - मनुष्य ये क्यों नही समझ रहा है।
साधू : सब समझेगा सिर्फ समझाने वाला चाहिए चलो तुम्हें एक कथा सुनाते है।
जंगल में वृक्षों का राजा बरगद का दरबार ।
तभी भागता आया सैनिक करता हुआ गुहार ।
करता हुआ गुहार सभा में वो चिल्लाया ।
राजा जी ने उसे तुरत तब अपने पास बुलाया
अब आगे की सुनो कहानी देखो कहानी देखों कहानी

(दृश्य द्वितीय)

नीम पेड़ : महाराज बचाओ ! महाराज बचाओ!
बरगद : क्या बात है नीम तुम इतने घबराये क्यों हो ।
नीम : महाराज सब नष्ट हो गया ।
बरगद : सब नष्ट हो गया क्या जंगल में आग लग गई, क्या आंधी तूफान ने हमारे घरो को उजाड़ा है !
नीम : नही महाराज न जंगल में आग लगी है न आंधी तूफान आया है।
बरगद : फिर क्या हुआ खुलकर बताओ।
नींम : महाराज गॉव में फिर से लकड़हारे आ गये हैं
बरगद : क्या फिर से आ गये ? हमने उन्हें समझाया तो था हमने बारिश भी कम कर दी है और हवा का भी वेग भी कम कर दिया गया है।
पीपल : मगर राजन ! मानव पर इसका कोई खास असर नहीं हुआ, वह हमारी छोटी से छोटी बड़ी से बडी जाति को खत्म कर रहा
बरगद : छोटी से छोटी मतलब पीपल जी गुरूदेव!

पीपल : जी गुरूदेव महाराज, नीम, ऑवला, जामुन को अपना कुटुम्व बचाना मुश्किल हो रहा है और अब तो
बरगद : अब तो क्या!
पीपल : महाराज छोटी से छोटी जड़ी बूटियों की जाति भी नष्ट की जा रही है। शहर से पालीथिन, डिस्पोजल आदि हमारी जड़ों को नुकसान पहुंचा रहे हैं।
बरगद : हाँ गुरूदेव हमारी ये सभी उपज मानव के जीवन की रक्षक हैं संजीवनी हैं
पीपल : अरे महाराज ! प्लास्टिक, पॉलीथिन से जीवन जीता मानव अब ये समझ रहा है कि उसे जड़ी-बूटियों की नहीं मेडीकल दवाईयों की आवश्यकता महसूस होने लगी है।
बरगद : ये तो वहुत खतरनाक जीव है।
नीम : हाँ महाराज मानव ने पशु पक्षी की कई जातियों को नष्ट कर दिया ।
बरगद : पशु-पक्षी की हत्या !
नीम : हॉ महाराज चील, गिद्द, लिडईया तक नहीं छोड़े ।
बरगद : सही कहा तुमने चील गिद्द की प्रजातियाँ नष्ट हो रही है, प्लास्टिक से निकलने वाला धुओं,अत्याधिक कार्बन, बढ़ती हुई गर्मी सभी के कारण पर्यावरण प्रदूषित कर दिया है, पशु पक्षी की जातियों समाप्त हो रही है। नदी तालाब सूख रहे हैं। पहाड़ों को काटा जा रहा है कैसे बचेगा धरती का संतुलन । विनाश, घोर विनाश । गुरूदेव वो दिन दूर नहीं जब भूकम्प, तूफान महामारी के कारण मानव का पतन होगा।
पीपल : हॉ महाराज ।
बरगद : और इसका एक मात्र जिम्मेदार मानव होगा मानव होगा गुरूदेव मानव ।
पीपल: राजन फिर क्या किया जाये कैसे होगी जंगल की रक्षा, कैसे होगा जल, पशु, पक्षी पर्वत पहाड़ जैव विविधता का संरक्षण कैसे होगा महाराज कैसे ?
बरगद : हमें कुछ करना होगा ।

नीम : क्या करेगे महाराज !
बरगद : हम मानव से बात करेगें। उसे समझायेगे कि अभी भी मौका है अपने लिये गड्ढा मत खोदो नहीं तो आने वाली पीढ़ी जन्म के तुरन्त बाद मर जायेगी।
सभी : ठीक कहा महाराज, महाराज की जय हो ।
जंगल में मंगल हो पशु पक्षी वृक्ष करें पुकार ।
हम सब मिलकर बचायें धरती का सुख आधार । **(सभी चले जाते है)**

(दृश्य तृतीय)

(बरगद अपने साथियों सहित एक जगह खड़ा हो जाता है तभी लकड़हारे का प्रवेश)
लकडहारा : पेड़-पेड़ तुम इतने बड़े ।
बहुत दिनों से यहां खड़े ।
पेड़ : भैया अपना नाम बताओ ।
क्या है मुझसे काम बताओ।
लकड़हारा : काम से क्या लेना देना काटू मेरा नाम ।
लकड़ी काटकर शहर बेचता मिलते मुझको दाम ।
मिलते मुझको दाम पालता बच्चे अपने ।
और रूपये से होते मेरे सच्चे सपने ।
पेड़ : पर भैया इससे तो हम सब मिट जायेगे।
नही रहेगा जंगल तो फिर पशु पक्षी कहां जायेंगे ।
लकड़हारा : पेड़ नहीं काटूगा तो फिर ईधन कहां से लाऊँगा ।
अपना सबका पेट को भरने खाना कैसे पकाऊँगा।
पेड़ : मानव देखो हम वनवासी । हम सबके हैं साथी ।
पशु पक्षी जन जीवन हमसे । श्वांस श्वांस अविनाशी
लकड़हारा : छोड़ो ये बेकार की बातें।
मेरा रास्ता छोड़ो तुम्हें पूजते हम सब लेकिन, मर्यादा न तोड़ो।
बरगद : तुम पूजते पीपल बरगद । मिलती जीवन छईया ।
नीम, ऑवला, जामुन, शीशम आम, बबूल है भैया
हम सब देते फल फूल वायु जिससे चलता जीवन तेरा ।
स्वयं मिटाने अपना जीवन करते फिरते तेरा मेरा
लकड़हारा : देखो बरगद मानव का तन
जीव जीव से बढ़कर क्यों इठलाते
क्यों इतराते बहुत बोलते चढ़कर ।
एक कुल्हाडी के मारे से हो जाओगे ढेर
मेरे रास्ते से हट जाओ मत कर मुझको देर ।
बरगद : तो तुम ऐसे नही मानोगे ।
मानव : नहीं मानूगा।
बरगद : पृथ्वी, जल, अग्नि, गगन, समीर सभी आओ।
सभी : आया महाराज क्या बात है महाराज ।
बरगद : देखो ये है तुम्हारा अपराधी । क्षिति बताओ क्या-क्या किये इसने अपराध बोलो ।
क्षिति : महाराज खन्ती खोदी निज स्वारथ को । तोड़ रहा है पाहन।
रेत, मुरम, से घर बनवाकर, करता भू का दोहन ।
बरगद : वाह मानव तू बड़ा चालाक है, तुझे नहीं पता कि पहाडों से पृथ्वी का संतुलन रहता है। मिट्टी मुरम रेत को ढौ ढौकर तू अपने लिये गड्ढा खोद रहा है ।
मानव : मैं सरकार को टैक्स देता हूँ ।
बरगद : तो क्या टैक्स पहाड़ मिटाने के लिये देते हो, और तुम बोलो जल
जल : महाराज इसने ताल नदियाँ कुएं गंदे कर दिये,
कूड़ा, कचरा नाला के संग नदियों में बहा दिये
फैक्ट्रियों का गंदा पानी नदियों से सागर में डाला
जो था कार्वन केमीकल संग । पीला, नीला और काला
मानव : तुम लोग मेरा विकास नहीं होने दोगे अरे पैसा है तो सब कुछ है ।
बाप बड़ा न भईया सबसे बड़ा रूपइया
बरगद : क्यों रे मानव ये क्या कर रहा है तू । आने वाली पीढ़ी को क्या बो रहा है तू ।
पावक : महाराज ।
बरगद : हॉ अग्नि बोलो।
पावक : महाराज पेट्रोल, डीजल और बिजली का करता है दुरूपयोग । जिससे अपने देश को पहुंचे आर्थिकता का बोझ।
मानव : अरे बीबी बच्चो को मोटरसाईकिल, कार पर नहीं घुमायेगें तो किससे घुमायेंगे।
बरगद : हूँ मोटरसाईकिल चलाता है, कार चलाता है, गलत कमाई की पेट्रोल जलाता है। दिन में लाईट जलाता है वो भी फोकट की । एक दिन ऐसा आयेगा जब तू पेट्रोल डीजल बिजली सभी को तरसेगा मूर्ख। बताओ और तुम बताओ गगन...
क्या किया है मानव ने वायु और गगन में ।
बड़ा स्वार्थी वनकर रहता अपने सुख मगन में ।
गगन,समीर : प्लास्टिक, पॉलीथिन बनाकर गॉव शहर में लाता ।
उपयोगो के बाद उसे कूडे के साथ जलाता ।
जिससे निकलने वाली गैंसे हमें प्रदूषित करती
शुद्ध वायु को पाने वाली जाति सभी तरसती ।
मानव : अरे तो बाजार से सामान काहे में लायेगे। अब वो दिन गये जव घर से थैला लेकर जाता था ।
बरगद : अरे ये तो स्वांस भी नहीं लेने देगा ।
गगन समीर : महाराज देश में उपजी जड़ी बूटियाँ, अपना खोती तत्व वर्षों से रक्षा जो करती अव हो रहीं हैं नष्ट।
बरगद : क्यों रे मानव तू तो बडा खतरनाक जीव है ।
तूने मन में डाल ली पतन की नींव है ।
जैव विविधता तुम्हें पालती तूने तोडा नाता ।
पंचतत्व से बना जो जीवन तेरा इनसे नाता ।
समझ सका तो अभी संभल लो जल्दी चेतो मानव ।
कर्मो का फल तुरत मिलेगा । बन बैठा तू दानव।
बरगद : तो सुनो मानव ने प्रकृति के सभी नियमों का उल्लंघन किया है पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जल, वायु, अग्नि गगन सभी की स्वतंत्रता के साथ खिलवाड़ किया है। अतः
सभी : अतः क्या महाराज ?

बरगद : वर्षा पर प्रतिबंध लगा दो, वायु को दूषित फैलाओ,
गर्मी से जब तपन बढ़ेगी धरती तुम बंजर हो जाओ।
मानव : महाराज ये क्या कह रहे हो इससे से तो हम मर जायेगें।
बरगद : जड़ी बूटियाँ देश छोड़ दो खाने दो इसको मेडीकल
बीमारी से घिरता मानव फंस जायेगा अपने दल दल ।
मानव: अरे महाराज क्षमा करें हम से बहुत बड़ी भूल हो गई क्षमा करें ऐसे दण्ड न दे महाराज । न दे महाराज **(रोता बिलखता है)**
पीपल : महाराज !
बरगद : हॉ गुरूदेव ।
पीपल : अगर ये मन से गुहार कर रहा है तो क्षमा कर दें।
बरगद : क्यों मानव गुरूदेव पीपल देव ने जो कहा क्या तुम्हारे मन में ऐसा विचार आया है।
मानव : हॉ महाराज जल वायु गगन, पृथ्वी, अग्नि, पेड़ पौधे पशु पक्षी, जड़ी-बूटियों सभी को नष्ट करने में मेरा ही हाथ है, हमें क्षमा करें प्रभु क्षमा करे ।
बरगद : तो ठीक है अगर तुम्हें अपनी गलती का एहसास है तो तुम शपथ लो
मानव : हम शपथ लेते हैं। जैसा आप कहेगें महाराज मैं आज्ञा का पालन करूंगा।
बरगद : तो सुनो मानव गॉव-गॉव कोने-कोने में वृक्ष लगाना है ।
हर मानव का धर्म यही सबको समझाना है।
नदी झील तालाब कुओं का करो न गंदा पानी ।
पानी जीवन दानी कहते वेद पुरातन ज्ञानी ।
पॉलीथिन उपयोग न करना ऐसा मन में ठानो ।
वायु प्रदूषण से वचने का ये उपाय पहचानो।
मानव : आई समझ में ये सब बाते मेरे मन गुरूदेव ।
आज प्रतिज्ञा करता मानव आशीष दे गुरूदेव ।
(मानव झुककर प्रणाम करता है)
बरगद : सुबह का भूला शाम को लौटे उसे न भूला कहते । पीर पराई वो ही जाने जो है दर्द को सहते । **(मानव क्षमा मांगता हुआ धन्यवाद कहता हुआ गुरू के चरणों में गिर जाता है और गुरूजी उसे उठाकर अपने गले लगा लेते है गुरूजी एवं महाराज का जयकारा लगता है।)**
सभी: गुरूजी की जय हो । बरगद जी महाराज की जय हो।

(सभी झुककर बरगद को प्रणाम करते हैं)

(समाप्त)

ताज़े पानी की झील -
करेरी झील

डॉक्टर जय महलवाल (अनजान)
राजकीय महाविद्यालय बिलासपुर
हिमाचल प्रदेश

(अगले अंक से आगे)

इस सारे रास्ते में चलते-चलते मैंने एक कविता भी लिख डाली ।जो जो हमारे साथ हुआ,थोड़ी-थोड़ी पंक्तियां जोड़कर मैने छोटी सी कविता करेरी झील के ऊपर लिखी जिसको मैं यहां पर शेयर कर रहा हूं:

अपनी बोली अपनी पछ्यान मितरो,
करेरी झीला चढ़दे समझो,
निकली जांदे प्राण मितरो,
करेरी झीला जो जाना जरूर मितरो,
रस्ता बड़ा खराब पर इसजो,
कल राति पया बरखा रा दड़कया खूब मितरो,
लहासे ने हुई गई सड़क बंद मितरो,
करेरी सांजो इक बंदे बिना दूधे वाली चाअ पियाई मितरो,
फेरी शुरू हुई झीला जाने वाली चढ़ाई मितरो,
बदिया गल ए हुई मितरो,
इकी कुत्ते रस्ता दसने जो सौग अहां दी निभाई मितरो,
हूण धूप बी रस्ते च आई गई मितरो,
पसीने साडियां जैकटा खुलायियां मितरो,
नहौली जाइने थोड़ी हिम्मत आई मितरो,
सन सन खड्डा री आवाज़ आई मितरो,
फेरी शुरू हुई खड़ी चढ़ाई मितरो,
पैंतयां चढ़ी चढ़ी सांस गई फूली मितरो,
जंगा च हूण पीड निकली आई मितरो,
खड्डा रेयां पत्थरां पर छाल देयीके रस्ता लांघ्या मितरो,
बड़ा रिस्की काम्म ये अहाँ कितया मितरो ,
कुते दी हिम्मता देयो दात मितरो,
तिना बी खतरनाक नाला सोचा कियां लांघया हूणो मितरो,
बड़ा कठन रस्ता करेरी झीला जाने जो मितरो,
पर हिम्मत आहां बी नी हारी मितरो,
बाटा चली चली के ए कविता मैं बनाई मितरो,
झीला ले आइने तुहां जो फेरी मैं सुनाई मितरो,
3110 मीटर ऊंचाई ईसा झीला री मितरो,
बड़ा छैल नजारा करेरी झील रा मितरो।।

जैसे ही हम थोड़ी दूर गए, हमको बेस कैंप के टेंट नजर आए और हमारी जान में जान आई। परंतु एकदम से ही ओलावृष्टि फिर से इतनी तेज हो गई कि हमें चलना मुश्किल हो गया और हम एक टेंट में घुस गए जहां पर दो लड़के रर्जाइयां ओढ़ के सोए हुए थे। हमने उनसे बातचीत की तो उन्होंने कहा कि हम ₹1500 एक आदमी के ठहरने का लेते हैं और हमने उनसे मौसम के बारे में बात की तो उन्होंने कहा कि पिछली रात को भी भयंकर बारिश हुई थी । इसलिए आज ऊपर की तरफ बहुत कम लोग आए। तो आपको भी नीचे जाने में मुश्किल होगी। जैसे ही थोड़ी देर बाद वह ओलावृष्टि बंद हुई हम अपने बैग को पीठ पर लटका के करेरी झील की तरफ चल दिए। उन्होंने कहा कि झील यहां से लगभग आधा या एक किलोमीटर होगी। टाइगर आगे-आगे हमारे साथ चलता गया, छोटे-छोटे बर्फ के ग्लेशियर रास्ते में हमने लांघे तो सफर और रोमांचकारी हो गया। हमको हाथों और पैरों में बहुत ठंड महसूस हो रही थी तो वहीं पर टाइगर बर्फ के बीच में घुसकर अपने शरीर को खुजला रहा था। थोड़ी दूर चलने के बाद सामने हमें लाल रंग का एक मंदिर का टॉप नजर आया, फिर हम लोगों ने अंदाजा लगाया कि यह वही शिव मंदिर है जो करेरी झील के साथ स्थित है । इसका मतलब है कि हम अपनी मंजिल के बहुत नजदीक पहुंच चुके हैं। इसके बाद हमने फिर से नाला क्रॉस किया और उसके 5 मिनट बाद ही हम अपने गंतव्य स्थान समुद्र तल से लगभग 3110 मीटर ऊंचाई पर स्थित कांगड़ा जिले की प्रसिद्ध करेरी झील में पहुंच चुके थे। यह झील उत्तर पश्चिम धौलाधार पर्वत श्रृंखला के दक्षिण में ताज़ा पानी की झील है। क्योंकि हल्की-हल्की बारिश लगी हुई थी हमने सबसे पहले शिवजी के मंदिर में अपना शीश नवाया और अपने बैग को अंदर रखकर मंदिर के प्रांगण से झील के दर्शन किए। सामने बहुत ही सुंदर और मनमोहक झील और बर्फ से लदी हुई चोटियां हमारे मन को बहुत प्रफुल्लित कर रही थी ।

रोमांच का दृश्य इतना सुंदर था कि हमारी थकान चूर-चूर हो गई । हमसे आगे तीन लड़के जो लगभग 15 से 18 वर्ष की आयु के थे, वह भी झील के दर्शन करने आए थे जैसे ही हमने उनसे बातचीत की, तो उन्होंने बताया की जैसे हम लोग शिव भगवान के मंदिर में धूप अगरबत्ती कर रहे थे तो एकदम से बिजली गिरी और हमारे एक साथी के मुंह के पास ही वह बिजली गिरी। तो यह लड़का सहम गया। सच में ही वह लड़का डरा हुआ था ,हमने उसको हिम्मत दी कि कुछ नहीं होता है भगवान शिव का नाम लो भगवान भोलेनाथ सब की रक्षा करते हैं।वह तीनों लड़के अपने पूरे इंतजाम के साथ रात को यहां रहने आए थे। वह हमें कहने लगे कि क्या आप यहां रहेंगे, तो हमने बोला कि हम यहां से वापिस चले जाएंगे। उन्होंने बोला कि आपको नीचे जाने में मुश्किल हो सकती है क्योंकि मौसम फिर से खराब हो चुका है। हमने कहा कि हम यहां लगभग आधा घंटा रुकने के बाद यहां से निकल पड़ेंगे। हमने वहां पर कुछ छायाचित्र अपनी स्मृति के लिए अपने फोन में कैद कर लिए। मैने वो कविता भी वहां पर पढ़कर अपने साथियों को सुनाई। तुरंत ही वहां पर हल्की-हल्की बर्फबारी शुरू हो गई जो कि हमारे मन को एक तरफ जहां आनंदित कर रही थी दूसरी तरफ इस चिंता में डाल रही थी कि हम क्या वापस नीचे सड़क में पहुंच भी पाएंगे या नहीं? टाइगर भी हमारे साथ-साथ ही यहां तक आया था, उसने झील के चारों तरफ एक चक्कर लगाया और वापस मंदिर के प्रांगण में आ गया। जैसे ही बर्फबारी कम हुई ,हम लोगों ने दोबारा मंदिर में माथा टेका और वापिस अपनी मंजिल की तरफ चल दिए। क्योंकि यह ट्रैक लगभग 12 किलोमीटर का है लेकिन हमें 17 किलोमीटर का एक तरफा सफर करना पड़ा, जिसके लिए हमें लगभग 8 घंटे का समय लगा।

करेरी झील में थोड़ा सा आराम करने के बाद 4:00 बजे हम वापिस उतरने के लिए चल पड़े और शाम के ठीक 7:30 बजे सड़क पर, नौहली नामक स्थान पर पहुंच गए। क्योंकि अब अंधेरा हो चुका था इसलिए वहां दुकान बंद थी और हम इतने थक चुके थे कि आगे चलना हमारे लिए मुश्किल हो गया था। हमने वहां पर 10 मिनट आराम किया और फिर सड़क सड़क के रास्ते वापस खडबी की तरफ चल दिए। इस 5 किलोमीटर को चलने के लिए हमने लगभग 1 घंटा और लगा दिया। जैसे ही हम करेरी पंचायत पहुंचे वहां पर एक दुकान पर बैठकर हमने चाय की चुस्कियां ली ।वहां पर चाय का एक कप ₹30 का मिला। लेकिन चाय पी के हमें थोड़ी सी स्फूर्ति का अनुभव हुआ। हमने टाइगर को फिर से बिस्किट खाने को दिए और उसका शुक्रिया किया, उसने भी पूंछ हिला के हमें धन्यवाद दिया। ऐसा गाइड हमको पहली बार मिला था। इसके आगे हमने लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर और जाना था, जहां पर वह रास्ता अवरुद्ध था। दुकानदार से पूछने पर पता लगा कि दिन में रास्ता खोल दिया गया है, तभी बाहर एक टैक्सी वाला रुका, तो हमने उससे पूछा कि क्या आप हमें वहां तक ले चलेंगे लगभग डेढ़ किलोमीटर तो उसने बोला ठीक है मैं आपको वहां तक पहुंचा दूंगा। चाय पीने के बाद हम टैक्सी में बैठकर अपनी गाड़ी तक गए इसके बाद अपनी गाड़ी में बैठने के बाद हमने 10 मिनट आराम किया और वापस धर्मशाला रात के लगभग 10:30 बजे अपने घर पर पहुंच गए। करेरी झील एक बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक मन को लुभाने वाला स्थान है। वहां पर स्थित शिव मंदिर में पुजारी नहीं था, उन तीन लड़कों ने हमें बताया कि जन्माष्टमी/राधाष्टमी को यहां बहुत से श्रद्धालु आते हैं उस दिन यहां पुजारी होता है। मई महीने में बहुत से लोग करेरी झील की ट्रैकिंग करते हैं।

वैसे तो सब लोगों को वहां पर जाना चाहिए लेकिन विशेष कर बच्चों के साथ और औरतों के साथ कुछ इस तरह से अपना कार्यक्रम बनाएं ताकि एक रात को वहां ऊपर ठहर सके और दूसरे दिन वापिस आएं। रास्ता जरूर कठिन है लेकिन रोमांचकारी भी उतना ही है। ट्रैकिंग करने वालों के लिए तो बहुत ही आनंददाई रास्ता है ऊपर से प्रकृति की अनुपम छट्टा दिल को एक ऐसा सुकून देती है जिससे शरीर का रोम रोम प्रफुल्लित हो उठता है। कुल मिलाकर हमारा करेरी झील का ट्रैकिंग टूअर बहुत ही अच्छा रहा।

पर्व विशेष : कविता

भारत पर्वो-त्योहारों का देश है...तपती गर्मी के बाद जब मानसून आता है तो मन झूम उठता है, एक कृषि प्रधान समाज इसी भींगती बारिश के साथ अपने आनंदोत्सवों की शुरुआत करता है, और शुरू होती है महान भारतीय संस्कृति की पर्व-श्रृंखला. आगामी माह में पड़ने वाले प्रमुख पर्व त्योहारों (जैसे- राखी, पंद्रह अगस्त, जन्माष्टमी, शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस, विश्वकर्मा पूजा, गणेश चतुर्दशी, और सावन माह) पर युवा साहित्यकार व पर्यावरण चिंतक अंकुर सिंह जी द्वारा रचित कवितायेँ प्रस्तुत हैं :

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ. प्र

राखी भेजवा देना

बहन, राखी भेजवा देना,अबकी मैं ना आ पाऊंगा।
काम बहुत हैं ऑफिस में,मैं छुट्टी ना ले पाऊंगा।।

कलाई सुनी ना रहें मेरी,तुम याद ये रख लेना।
अपने भाई के पते पर,राखी तुम भेजवा देना।।

ये महंगाई है सबपे भारी, फिर भी राखी भेजवाना।
गर पूछे भांजी भांजा तो, उन्हें मामा का प्यार कहना।।

राखी पर ना मेरे आने से, तुम मुझसे ना रूठ जाना।
हाथ जोड़ कर रहा निवेदन, राखी जरूर भेजवा देना।

भेज रहा राखी उपहार संग, चिट्ठी में प्यार के दो बोल।
माफ करना अपने भाई को, मना न सका पर्व अनमोल।।

राह देख अबकी तुम मेरी, राखी थाली सजा ना लेना।
मेरे छुट्टी का है बड़ा झंझट,भेज राखी तुम फर्ज निभाना।

जन्माष्टमी

भादो मास के अष्टमी,कृष्ण लिए अवतार।
पुत्र मैया देवकी का,बना सबका तारणहार।।

मथुरा के कारागार में जन्मे,बाल-लीला किए गोकुल में।
यमुना किनारे खेले-खाले,शिक्षा लिए गुरुकुल में।।

गोकुल में चोरी - चोरी,माखन चुरा खूब खाते थे।
मित्र-मंडली और यारो संग,कृष्ण गईया चराने जाते थे।।

हाथो में होती इनके मुरली,मुकुट की शोभा बढ़ाता मोर।
यशोदा मैया का ये लाडला,कहलाता आज भी माखन चोर।।

हे केशव, हे माधव, सुनो हे गोपाल,इस जीवन में पीड़ा मुझे है अपरम्पार ।
मुरली वाले प्रभु, मुरली बजाकर ,कर दो मेरी नैया को तुम पार।।

आज पर्व है प्रभु जमाष्टमी का,कर दो मुझपर इतना उपकार।
हर पल, हर क्षण हम भक्ति करे,और तुम करो मेरे जीवन का उद्धार।।

पंद्रह अगस्त

पंद्रह अगस्त सैंतालीस को,
दिवस कैलेंडर था शुक्रवार।
मिली हमें आजादी इस दिन,
खुला अपने सपनों का द्वार।।

आजादी के साथ देश ने,
बंटवारे का दर्द भी झेला।
आजादी खातिर गोरों ने,
खून की होली हमसे खेला।

आजादी की चाहत दिल में,
सत्तावन में दहक उठी थी।
कोलकत्ता के बैरकपुर में,
मंगल की गोली बोली थी।।

उन्नीस सौ सैंतालीस के पहले,
अपनी भी बड़ी लाचारी थी।
ब्रिटिश सरकार जुल्म ढहाती,
फिरंगी सरकार दुष्टाचारी थी।।

सत्ताइस फरवरी इकतीस को,
आजाद ने खुदपर पिस्टल ताना।
पच्चीस साल का नव-युवक,
आजादी का था दीवाना ।।

उन्नीस सौ उन्तीस में
पूर्ण स्वराज्य की मांग किया।
अगस्त बयालीस में गांधी ने,
'भारत-छोड़ो' का एलान किया।

कई शहादत के बाद हमने,
आज तिरंगा लहराया।
नमन वीरों के कुर्बानी पर,
जिससे देश आजादी पाया।

शिक्षक

प्रणाम उस मानुष तन को,शिक्षा जिससे हमने पाया।
माता पिता के बाद हमपर,उनकी है प्रेम मधुर छाया।।

नमन करता उन गुरुवर को,शिक्षा दें मुझे सफल बनाए।।
अच्छे बुरे का फर्क बता,उन्नति का सफल राह दिखाए।।

शिक्षक अध्यापक गुरु जैसें,नाम अनेकों मानुष तन के,
कभी भय, कभी प्यार जता,हमें जीवन की राह दिखाते।।

कभी भय, कभी फटकार कर,कुम्हार भांति रोज़ पकाते।
लगन और अथक मेहनत से,शिक्षक हमें सर्वश्रेष्ठ बनाते।

कहलाते है शिक्षक जग में,ब्रह्मा, विष्णु, महेश से महान।
मिली शिक्षक से शिक्षा हमें जग में दिलाती खूब सम्मान।।

शिक्षा बिना तो मानव जीवन दुर्गम, पीड़ित और बेकार।
गुरुवर ने हमें शिक्षा देकर हमपर कर दी बहुत उपकार।।

अपने शिष्य को सफल देख प्रफुल्लित होता शिक्षक मन।
अपने गुणिजन गुरुवर को मैं, अर्पित करता श्रद्धा सुमन।।

हिंदी बने राष्ट्र भाषा

हमारा हो निज भाषा पर अधिकार,
प्रयोग हिंदी का, करें इसका विस्तार।
निज भाषा निज उन्नति का कारक,
निज भाषा से मिटे सभी का अंधकार।।

हिंदी है हिंदुस्तान की रानी,
हो रही अब सभी से बेगानी।
अन्य भाषा संग, हिंदी अपनाओ,
ताकि हिंदी संग ना हो बेमानी।।

माथे की शोभा बढ़ाती बिंदी,
निज भाषा जान हैं हिन्दी।
आओ मिल इसका करें विस्तार,
ताकि गर्व हमपर नई आबादी।।

हिंदी हम सब की हैं मातृ-भाषा,
छोड़ इसे ना करो तुम निराशा।
हिंदी बोलने में तुम मत शरमाओं,
ताकि हिंदी बने हमारी राष्ट्र भाषा।।

हिंदी हैं अपनी राजभाषा,
बनाना इसे अब राष्ट्रभाषा।
आओ निज भाषा से प्यार करें
ताकि हिंदी को ना मिले निराशा।।

महात्मा गांधी जी कहते थे,
हिंदी है जनमानस की भाषा ।
कहा उन्नीस सौं अठारह में बापू ने,
सब बनाओ हिंदी को राष्ट्र भाषा।।

पहली अंग्रेजी, फिर चीनी,
ज्यादा बोले जाने वाली है भाषा।
हर कार्य में हिंदी को अपनाकर,
बनाए इसको हम पहली भाषा।

शिव वंदना

जय हो देवों के देव,
प्रणाम तुम्हे है महादेव।
हाथ में डमरू, कंठ भुजंगा,
प्रणाम तुम्हे शिव पार्वती संगा।।

बोलो जय जय देवाधिदेव ,
प्रणाम तुम्हें है महादेव ।।

हे कैलासी , हे सन्यासी,
शिव को सबसे प्यारी काशी।
हे नीलकंठ !, हे महादेव !
रक्षा करो मेरी देवाधिदेव।।

शिव का अर्थ है मंगलकारी,
शिव पूजन है सब दुखहारी।।
हे जटाधारी ! शिव, दुष्टों का
ना देर करो , संहार करो ,
प्रसन्न होकर मम भक्ति से
मेरा जल्दी उद्धार करो।।

बोलो जय जय देवाधिदेव ,
प्रणाम तुम्हें है महादेव ।।

नंदी, भृंगी , टुंडी, श्रृंगी, संग,
नन्दिकेश्वर,भूतनाथ शिवगण।
भांग, धतूरा , पंचामृत संग,
शिव को पूजे सब भक्तगण।।

बोलो जय जय देवाधिदेव ,
प्रणाम तुम्हे है महादेव ।।

सोमनाथ संग बारह धाम,
शिव पूजन से बनते काम।
आओ भक्तों करें प्रणाम,
शिव भक्ति से बनेंगे काम।।

बोलो जय जय देवाधिदेव।
प्रणाम तुम्हे है महादेव ।।

हे भोले नाथ !, हे शिव शंकर !,
शक्ति संग कहलाते अर्धनारीश्वर!
हे अमृतेश्वर !, हे महाकालेश्वर,
दु:ख हरो हमारी सब परमेश्वर।।

बोलो जय जय देवाधिदेव ,
प्रणाम तुम्हे है महादेव ।।

अश्वनी अकल्पित
नई दिल्ली

बरसो बरसो सावन
देखो आसमान में कारी घटा
जैसे गोपियों के आंख में काजल सा घुला
बरस-बरस के मन महकाती हो
मन को सुखद अनुभूति कराती हो,
तरस रहे है वन उपवन
तेरा रास्ता देखे किसान के नयन ,
तुम हो धरा की जीवन दाता
पशु पक्षी मानुष और प्रकृति की माता
आओ इस धरा का संताप हरो
बरस कर सबका ताप हरो
शीतल करो सबका मन
आओ सावन झूम के सबके आंगन

डॉ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
पटना, बिहार

प्रेम! प्रेम! प्रेम!
आखिर क्या है... प्रेम...?
क्या इसकी व्याख्या हो सकती...?
शायद नहीं...!
यह, देह- सीमा, देश- काल, शब्द - भाव-
सबसे परे है...!
एक अद्वितीय अनुभूति...
शायद "गूँगे का गुड़" - सा
संगीत के सुर- सा...
ईश्वर के निर्गुण रूप की परिणति-
यह प्रेम ही तो है...!
"विनु पद चलहिं सुनहिं बिनु काना
कर बिनु करम करहिं विधि नाना"
सम्पूर्ण सृष्टि के कार्य- व्यापार का आधार -
यह, प्रेम ही तो है...!
युग - युग से सृष्टि - चक्र चलता आ रहा -
एक आकर्षण - बीज -
सर्वत्र प्रस्फुटित होता -
मचलता... संभलता आ रहा...
कैसे...? क्यूँ...?
कहना है मुश्किल...!
पर है, अवश्य...कुछ...
'वह' जो है अवर्णनीय...अद्वितीय... अकथनीय...!
समझ पाना है मुश्किल...!
इसे ढूँढना है....
'खुद में ढूँढो'...!
मिल गया अगर,
तो तुमने पा लिया- दुर्लभ...!
क्योंकि, उसका परावर्तित रूप ही-
सृष्टि के कण- कण में...
असीम अबाध -
आनंद - रूप में है सुलभ!!!

डा. राजेश तिवारी 'मक्खन'
झांसी, उ. प्र.

धरती मेरी माँ है इसको स्वस्थ और स्वच्छ बनायें ।
आओ इसकी रक्षा और सुरक्षा का दायित्व उठायें ।।

अवैध और अनैतिकता से इसका खनन जो करते ।
सोचो इसको दिये घाव जो कहो वो कैसे भरते ।।
इनको हरी भरी रखना है ये रोमावली है वृक्ष लतायें ।

मृदा प्रदूषति न करना, यह जनता को समझा दो ।
पन्नी, पोलीथीन आदि को अब ही आग लगा दो ।।
गोमय खाद गौमूत्र आदि से इसे आओ उर्वरक बनाये ।

धरती मां हम सब सपूत हैं इसका ध्यान भी धरना ।
इसकी रक्षा और स्वाभिमान हित जीना है व मरना ।।
मातृ भूमि को नमन करें हम सब श्रद्धा शीश झुकाये ।

भूदेवी और श्री देवी को नमन सभी करते हैं लोग ।
अक्षत चन्दन पुष्प दीप से अर्चन करें लगाते भोग ।।
आओ अपनी मातृभूमि पर श्रद्धा से सुमन चढाये ।

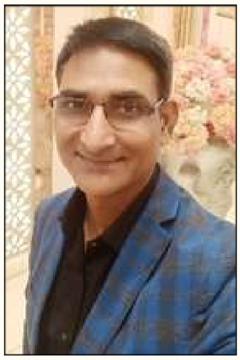

मृत्युंजय कुमार मनोज
ग्रेटर नोएडा (पश्चिम),उ. प्र.

जल संरक्षण

करें बूंद-बूंद की बचत
हर जगह,हर समय
ब्रश, शेविंग, स्नान करने से लेकर
बर्तन,वाहन हर चीज धोते समय
बारिश की बूंदों का
घर-घर करें संरक्षण
तालाब, कुंआ, टांका को दें पुनर्जीवन
नदियों के जल कोन करें प्रदूषित
तटों के आसपास रखें मानवीय गतिविधियां
अत्यंत सीमित
हरियाली की कीमत पर
न करें विकास
खूब लगाएं पेड़-पौधे
जंगल करें आबाद
जिस तीव्रता से हो रही है
धरा जलविहीन
भावी पीढ़ी का जीवन
होगा अत्यंत चुनौतीपूर्ण
जल संरक्षण को बनाएं
जीवन का मिशन
तभी बच पाएगा
भावी पीढ़ी का जीवन।

नीरज कुमार
मऊ, उ. प्र.

आपदा में अवसर अक्सर मिल जाते हैं
कांटों में रहकर भी फूल खिल जाते हैं.

तुम निरन्तर कोशिशें जारी रखो
अपनी कमियों पे सदा भारी रहो
कड़ी लगन से ही सफ़लता सब पाते हैं.

अपनी इच्छाशक्ति को महसूस करो
क्रांतिकारी तुम बनो उद्घोष करो
ऐसी दृढ़ता से विरोधी दहल जाते हैं.

लोग क्या कहते हैं तुम सोचो नहीं
लक्ष्य को साधे रहो भटको नहीं
धैर्य रखने से सब उत्तर मिल जाते हैं.

आपदा में अवसर अक्सर मिल जाते हैं
कांटों में रहकर भी फूल खिल जाते हैं .

मुकेश कुमार मोदी
बीकानेर, राजस्थान

जीने की असली तालीम

फूलों से दिल वालों को, कांटा चुभाया जायेगा
काम निकलने के बाद, उनको भुलाया जायेगा

दर्द देना है इस जमाने की, बहुत पुरानी आदत
इसलिए मौका पाते ही, कांटा चुभाया जायेगा

चार कंधों की जरूरत के, लायक भी न छोड़ेगा
वफा का जनाजा भी, इस कदर उठाया जायेगा

जज्बातों का कोई मोल, न समझेगा ये जमाना
मर्जी के बगैर तुम्हें, कड़वा घूंट पिलाया जायेगा

सबका यक़ीन करने की, आदत करेगी नुकसान
वक्त बे वक्त तुम्हें, सिर्फ धोखा खिलाया जायेगा

बुरे हालातों से मिलेगी, जीने की असली तालीम
ठोकरें खिलाकर तुमको, जीना सिखाया जायेगा

कृतिका सिंह के कार्टून

कृतिका सिंह जी उभरती हुई कार्टूनिस्ट हैं, जीवन के विविध पक्षों पर आपके सीधे हस्तक्षेप करते कार्टून बहुत लोकप्रिय हैं, आप कृतिका जी को उनके फेसबुक पेज Kritika cartoonist (https://www.facebook.com/cartoonistkritika?mibextid=ZbWKwL) पर फॉलो भी कर सकते हैं

प्रस्तुत है कृतिका जी के जीवंत कार्टून :

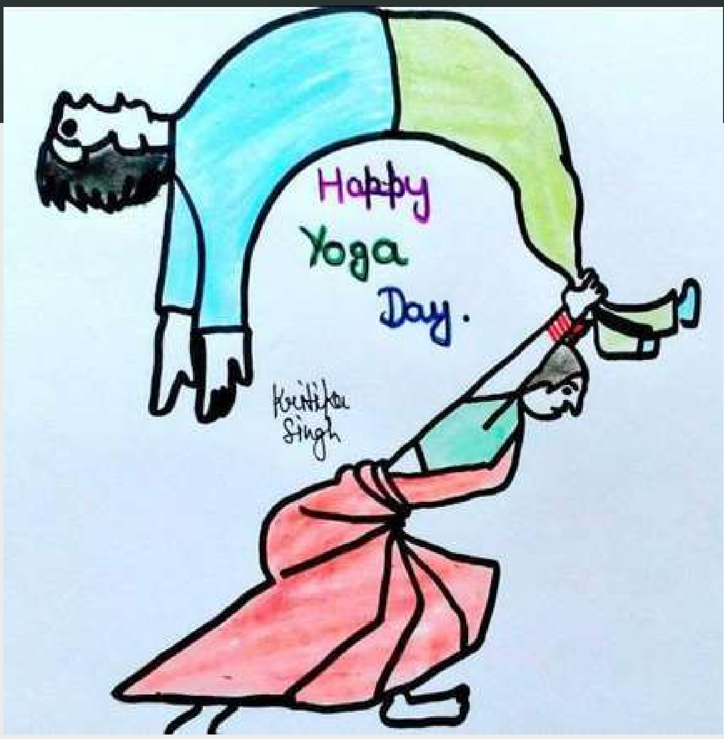

वीथिका ई पत्रिका :आपसे आपकी बात

वीथिका ई पत्रिका साहित्य, कला, संस्कृति और विज्ञान को समर्पित मासिक ई पत्रिका है. आप हमारे वेबसाइट www.vithika.org से पत्रिका डाउनलोड कर सकते हैं, व लेखों, रचनाओं पर हमें अपने विचार भी भेज सकते हैं. वीथिका ई पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखक के अपने विचार हैं, इनसे या इनके विचारों से पत्रिका या पत्रिका की सम्पादकीय समिति किसी प्रकार की सहमति नहीं रखती.

हमें अपनी रचना या लेख भेजने के लिए आप उसे हिंदी भाषा में टाइप कर हमें जीमेल या whatsapp कर सकते हैं :

Gmail : vithikaportal@gmail.com
whatsapp: 8175800809